पंचकल्याणक महोत्सव पूजन

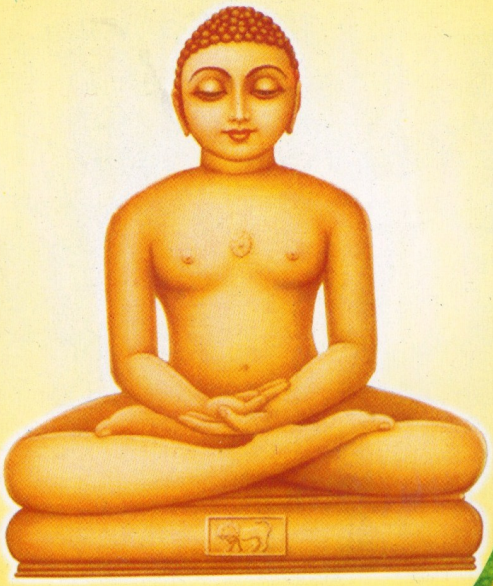

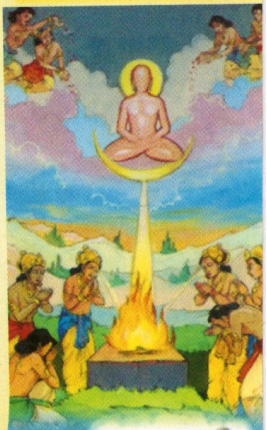

मङ्गलाष्टक

(शार्दूलविक्रीडित)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णुप्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥९॥

****

निरखत जिनचंद्रवदन स्वपद सुरुचि आई॥निरखत॥
प्रगटी निज आन की, पिछान ज्ञान भान की।
कला उदोत होत काम-यामिनी पलाई॥१॥
शाश्वत आनंद स्वाद पायो, विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई॥२॥
साधी निज साध्य की, समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधिकैं, आराधना सुइाई॥३॥
धन दिन छिन आज सुगुनि, चिंते जिनराज अबैं।
सुधरो सब काज दौल, अचल रिद्धि पाई॥४॥

यागमण्डल विधान

स्थापना

(गीता)

कर्मतम को हननकर, निजगुण प्रकाशन भानु हैं।
अन्त अर क्रम रहित दर्शन-ज्ञान-वीर्य निधान हैं॥
सुखस्वभावी द्रव्य चित् सत् शुद्ध परिणति में रमें,
आइये सब विघ्न चूरण पूजते सब अघ वमें॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अष्टक

(चाल)

गंगा-सिंधू वर पानी, सुवरणझारी भर लानी।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥१॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध गन्ध लाय मनहारी, भवताप शमन करतारी।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥२॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिसम शुचि अक्षत लाए, अक्षयगुण हित हुलसाए।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥३॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो अक्षयगुणपप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभकल्पद्रुमन सुमना ले, जग वशकर काम नशा ले।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥४॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान मनोहर लाए, जासे क्षुधा रोग शमाए।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥५॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो क्षुधारोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि रत्नमयी शुभ दीपा, तम मोह हरण उद्दीपा।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥६॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंधित धूप चढाऊँ, कर्मों के वंश जलाऊँ।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥७॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर दिवि भव फल लाए, शिव हेतु सुचरण चढाये।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥८॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवरण के पात्र धराए, शुचि आठों द्रव्य मिलाए।
गुरु पञ्च परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥९॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मङ्गल पंचक

(हरिगीतिका)

गुणरत्नभूषा विगतदूषाः सौम्यभावनिशाकराः
सद्बोध-भानुविभा-विभाषितदिक्चया विदुषांवराः।
निःसीमसौख्यसमूह मण्डितयोगखण्डितरतिवराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्री वीरनाथ जिनेश्वराः॥१॥

सद्ध्यानतीक्ष्ण-कृपणाधारा निहतकर्मकदम्बका,
देवेन्द्रवृन्दनरेन्दवन्द्याः प्राप्तसुखनिकुरम्बकाः।
योगीन्द्रयोगनिरूपणीयाः प्राप्तबोधकलापकाः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते सिद्धाः सदा सुखदायका॥२॥

आचारपंचकचरणचारणचुंचवः समताधराः
नानतपोभरहेतिहापितकर्मकाः सुखिताकराः।
गुप्तित्रयीपरिशीलनादिविभूषिता वदतांवराः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते श्री सूरयोऽर्जितशंभराः॥३॥

द्रव्यार्थ भेदविभिन्नश्रुतभरपूर्ण तत्त्वनिभालिनो
दुयोग्योगनिरोधदक्षाः सकलवरगुणशालिनः।
कर्तव्यदेशनतत्परा विज्ञानगौरवशालिनः
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते गुरुदेवदीधितिमालिनः॥४॥

संयमसमित्यावश्यका-परिहाणिगुप्तिविभूषिताः
पंचाक्षदान्तिसमुद्यताः समतासुधापरिभूषिताः।
भूपृष्ठविष्टरसायिनो विविधर्द्धिवृन्द विभूषिता
कुर्वन्तु मङ्गलमत्र ते मुनयः सदा शमभूषिताः॥५॥

****

पूजा पीठिका (हिन्दी)

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
अरहंतों को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन॥
और लोक के सर्वसाधुओं, को है विनय सहित वन्दन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को, बार-बार मेरा वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(वीरछन्द)

मंगल चार, चार हैं उत्तम, चार शरण में जाऊँ मैं।
मन-वच-काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं॥
श्री अरिहन्त देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल॥
श्री अरिहन्त लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम॥
श्री अरहंत शरण में जाऊँ, सिद्धशरण में मैं जाऊँ।
साधु शरण में जाऊँ, केवलिकथित धर्म शरणा जाऊँ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंगल विधान

अपवित्र हो या पवित्र, जो णमोकार को ध्याता है।
चाहे सुस्थित हो या दुस्थित, पाप-मुक्त हो जाता है॥१॥
हो पवित्र-अपवित्र दशा, कैसी भी क्यों नहिं हो जन की।
परमातम का ध्यान किये, हो अन्तर-बाहर शुचि उनकी॥२॥
है अजेय विघ्नों का हर्ता, णमोकार यह मंत्र महा।
सब मंगल में प्रथम सुमंगल, श्री जिनवर ने यही कहा॥३॥

सब पापों का है क्षयकारक, मंगल में सबसे पहला।
नमस्कार या णमोकार यह, मन्त्र जिनागम में पहला॥४॥
अर्हं ऐसे परं ब्रह्म-वाचक, अक्षर का ध्यान करूँ।
सिद्धचक्रका सद्बीजाक्षर, मन-वच-काय प्रणाम करूँ॥५॥
अष्टकर्म से रहित मुक्ति-लक्ष्मी के घर श्री सिद्ध नमूँ।
सम्यक्त्वादि गुणों से संयुत, तिन्हें ध्यान धर कर्म वमूँ॥६॥
जिनवर की भक्ति से होते, विघ्न समूह अन्त जानो।
भूत शाकिनी सर्प शांत हों, विष निर्विष होता मानो॥७॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

मैं प्रशस्त मंगल गानों से, युक्त जिनालय मांहि यजूँ।
जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य सजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

(ताटंक)

स्याद्वाद वाणी के नायक, श्री जिन को मैं नमन कराय।
परम अनंत चतुष्टयधारी, तीन जगत के ईश मनाय॥
मूलसंघ के सम्यग्दृष्टि, उनके पुण्य कमावन काज।
करूँ जिनेश्वर की यह पूजा, धन्य भाग्य है मेरा आज॥१॥
तीन लोक के गुरु जिन-पुंगव, महिमा सुन्दर उदित हुई।
सहज प्रकाशमयी द्रग्-ज्योति, जग-जन के हित मुदित हुई॥
समवसरण का अद्भुत वैभव, ललित प्रसन्न करी शोभा।
जग-जन का कल्याण करे अरु, क्षेम कुशल हो मन लोभा॥२॥
निर्मल बोध सुधा-सम प्रकटा, स्व-पर विवेक करावनहार।
तीन लोक में प्रथित हुआ जो, वस्तु त्रिजग प्रकटावनहार॥

ऐसा केवलज्ञान करे, कल्याण सभी जगतीतल का।
उसकी पूजा रचूँ आज मैं, कर्म बोझ करने हलका॥३॥
द्रव्य-शुद्धि अरु भाव-शुद्धि, दोनों विधि का अवलंबन कर।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा, मन-वच-तन एकत्रित कर॥
पुरुष-पुराण जिनेश्वर अर्हन्, एकमात्र वस्तू का स्थान।
उसकी केवलज्ञान वह्नि में, करूँ समस्त पुण्य आह्वान॥४॥

ॐ यज्ञविधिप्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगलपाठ

(चौपाई)

ऋषभदेव कल्याणकराय, अजित जिनेश्वर निर्मल थाय।
स्वस्ति करें संभव जिनराय, अभिनंदन के पूजों पाय॥१॥
स्वस्ति करें श्री सुमति जिनेश, पद्मप्रभ पद-पद्म विशेष।
श्री सुपार्श्व स्वस्ति के हेतु, चन्द्रप्रभ जन तारन सेतु॥२॥
पुष्पदंत कल्याण सहाय, शीतल शीतलता प्रकटाय।
श्री श्रेयांस स्वस्ति के श्वेत, वासुपूज्य शिवसाधन हेत॥३॥
विमलनाथ पद विमल कराय, श्री अनंत आनंद बताय।
धर्मनाथ शिव शर्म कराय, शांति विश्व में शांति कराय॥४॥
कुंथु और अरजिन सुखरास, शिवमग में मंगलमय आश।
मल्लि और मुनिसुव्रत देव, सकल कर्मक्षय कारण एव॥५॥
श्री नमि और नेमि जिनराज, करें सुमंगलमय सब काज।
पार्श्वनाथ तेवीसम ईश, महावीर वंदों जगदीश॥६॥
ये सब चौबीसों महाराज, करें भव्यजन मंगल काज।
मैं आयो पूजन के काज, राखो श्री जिन मेरी लाज॥७॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

देवाधिदेव अरहंत के चरणों का पूजन समस्त दुःखों का नाश करनेवाला है तथा इन्द्रियों के विषयों की कामना का नाश करके मोक्षरूप सुख की कामना को पूर्ण करनेवाला है; इसलिए अन्य की आराधना छोड़कर जिनेन्द्रदेव की ही नित्य आराधना करो।

– पण्डित सदासुखदासजी : रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका, पृष्ठ २०५

पंच-परमेष्ठी पूजन

अरहन्त सिद्ध आचार्य नमन, हे उपाध्याय हे साधु नमन।
जय पंच परम परमेष्ठी जय, भवसागर तारणहार नमन॥
मन-वच-काया पूर्वक करता हूँ, शुद्ध हृदय से आह्वानन।
मम हृदय विराजो तिष्ठ तिष्ठ, सन्निकट होहु मेरे भगवन॥
निज आत्मतत्त्व की प्राप्ति हेतु, ले अष्ट द्रव्य करता पूजन।
तुम चरणों की पूजन से प्रभु, निज सिद्ध रूप का हो दर्शन॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिनः! अत्र अवतरत-अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिनः! अत्र तिष्ठत, तिष्ठत, ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिनः! अत्र मम सन्निहितो भवत-भवत वषट्।

मैं तो अनादि से रोगी हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
तुम सम उज्ज्वलता पाने को, उज्ज्वल जल भरकर लाया हूँ॥
मैं जन्म-जरा-मृतु नाश करूँ, ऐसी दो शक्ति हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार-ताप में जल-जल कर, मैंने अगणित दुःख पाये हैं।
निज शान्त स्वभाव नहीं भाया, पर के ही गीत सुहाये हैं॥
शीतल चंदन है भेंट तुम्हें, संसार-ताप नाशो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःखमय अथाह भवसागर में, मेरी यह नौका भटक रही।
शुभ-अशुभभाव की भँवरों में चैतन्य शक्ति निज अटक रही॥

तन्दुल है धवल तुम्हें अर्पित, अक्षयपद प्राप्त करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं काम-व्यथा से घायल हूँ, सुख की न मिली किंचित् छाया।
चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ, तुम को पाकर मन हर्षाया।।
मैं काम-भाव विध्वंस करूँ, ऐसा दो शील हृदय स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं क्षुधा-रोग से व्याकुल हूँ, चारों गति में भरमाया हूँ।
जग के सारे पदार्थ पाकर भी, तृप्त नहीं हो पाया हूँ।।
नैवेद्य समर्पित करता हूँ, यह क्षुधा-रोग मेटो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्ध महा-अज्ञानी मैं, निज को पर का कर्त्ता माना।
मिथ्यातम के कारण मैंने, निज आत्मस्वरूप न पहिचाना।।
मैं दीप समर्पण करता हूँ, मोहान्धकार क्षय हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला धधक रही, संसार बढ़ रहा है प्रतिपल।
संवर से आस्रव को रोकूँ, निर्जरा सुरभि महके पल-पल।।
यह धूप चढ़ाकर अब आठों कर्मों का हनन करूँ स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मतत्त्व का मनन करूँ, चिंतवन करूँ निज चेतन का।
दो श्रद्धा-ज्ञान-चरित्र श्रेष्ठ, सच्चा पथ मोक्ष निकेतन का।।
उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ, निर्वाण महाफल हो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी।।
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ।
अबतक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ॥
यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्घ्य पद दो स्वामी।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव-दुःख मेटो अन्तर्यामी॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(पद्धरि)

जय वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, निज ध्यान लीन गुणमय अपार।
अष्टादश दोष रहित जिनवर, अरहन्त देव को नमस्कार॥
अविकल अविकारी अविनाशी, निजरूप निरंजन निराकार।
जय अजर अमर हे मुक्तिकंत, भगवंत सिद्ध को नमस्कार॥
छत्तीस सुगुण से तुम मण्डित, निश्चय रत्नत्रय हृदय धार।
हे मुक्तिवधू के अनुरागी, आचार्य सुगुरु को नमस्कार॥
एकादश अंग पूर्व चौदह के, पाठी गुण पच्चीस धार।
बाह्यान्तर मुनि मुद्रा महान, श्री उपाध्याय को नमस्कार॥
व्रत समिति गुप्ति चारित्र धर्म, वैराग्य भावना हृदय धार।
हे द्रव्य-भाव संयममय मुनिवर, सर्व साधु को नमस्कार॥
बहु पुण्यसंयोग मिला नरतन, जिनश्रुत जिनदेव चरण दर्शन।
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे, तो सफल बने मानव जीवन॥
निजपर का भेद जानकर मैं, निज को ही निज में लीन करूँ।
अब भेदज्ञान के द्वारा मैं, निज आत्म स्वयं स्वाधीन करूँ॥
निज में रत्नत्रय धारण कर, निज परिणति को ही पहचानूँ।
पर-परिणति से हो विमुख सदा, निज ज्ञानतत्त्व को ही जानूँ॥
जब ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता विकल्प तज, शुक्लध्यान मैं ध्याऊँगा।
तब चार घातिया क्षय करके, अरहन्त महापद पाऊँगा॥

है निश्चित सिद्ध स्वपद मेरा, हे प्रभु! कब इसको पाऊँगा।
सम्यक् पूजा फल पाने को, अब निजस्वभाव में आऊँगा॥
अपने स्वरूप की प्राप्ति हेतु, हे प्रभु! मैंने की है पूजन।
तबतक चरणों में ध्यान रहे, जबतक न प्राप्त हो मुक्ति सदन॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधुपंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालामहार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मंगल रूप अमंगल हर, मंगलमय मंगल गान करूँ।
मंगल में प्रथम श्रेष्ठ मंगल, नवकार मंत्र का ध्यान करूँ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

पंच परम परमेष्ठी देखे----------।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।
हो ऽ ऽ ऽ सम्यग्दर्शन होता है॥टेक॥
दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य स्वरूपी गुण अनन्त के धारी हैं।
जग को मुक्तिमार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं॥
मोक्षमार्ग के नेता देखे, विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥१॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, जो सिद्धालय के वासी हैं।
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर अमर अविनाशी हैं॥
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निजयोगी देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥२॥
साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं।
निज-पर के हितकारी गुरुवर, देव-धर्म परिचायक हैं॥
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥३॥
जिनवाणी को हृदयंगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं।
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानन्द में जीते हैं॥
द्रव्य-भाव श्रुत धारी देखे, बीस-पाँच गुणधारी देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥४॥
निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी।
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी॥
चलते-फिरते सिद्धप्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥५॥

(१)

पाँच परमेष्ठी, चार मंगल, चार उत्तम व चार शरण के लिए १७ अर्घ्य

(अडिल्ल)

काल अनन्ता भ्रमण करत जग जीव हैं।
तिनको भव तें काढि करत शुचि जीव हैं।।
ऐसे अर्हत् तीर्थनाथ पद ध्याय के।
पूजूँ अर्घ बनाय सुमन हरषाय के।।

ॐ ह्रीं अनन्तभवार्णवभयनिवारक-अनन्तगुणस्तुताय अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं नि. स्वाहा।।१।।

(हरिगीता)

कर्मकाष्ठ महान जाले ध्यान अग्नि जलायके।
गुण अष्ट लह व्यवहारनय निश्चय अनंत लहायके।।
निज आत्म में थिररूप रहके, सुधा स्वाद लखायके।
सो सिद्ध हैं कृतकृत्य चिन्मय भजूँ मन उमगायके।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकनिजात्मतत्त्वविभासकसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं नि. स्वाहा।।२।।

(त्रिभंगी)

मुनिगण को पालत आलस टालत आप संभालत परम यती।
जिनवाणि सुहानी शिवसुखदानी भविजन मानी धर सुमती।।
दीक्षा के दाता अघ से त्राता समसुखभाता ज्ञानपती।
शुभ पञ्चाचारा पालत प्यारा हैं आचारज कर्महती।।

ॐ ह्रीं अनवद्यविद्याविद्योतनाय आचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

(त्रोटक)

जय पाठक ज्ञान कृपान नमो, भवि जीवन हत अज्ञान नमो।
निज आत्म महानिधि धारक है, संशय वन दाह निवारक हैं।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपरिपूरण-श्रुतपाठनोद्यत-बुद्धिविभवधारकोपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

(द्रुतविलंबित)

सुभग तप द्वादश कर्तार हैं, ध्यान सार महान प्रचार हैं।
मुकति वास अचल यति साधते, सुख सु आतम जन्य सम्हारते॥

ॐ ह्रीं घोरतपोऽभिसंस्कृतध्यानस्वाध्यायनिरतसाधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं नि. स्वाहा॥४॥

(मालिनी)

अरि हनन सु अरिहन् पूज्य अर्हन् बताये।
मं पाप गलन हेतु मंगलं ध्यान लाए॥
मंगं सुखकारण मंगलीकं जताए।
ध्यानी छबि तेरी देखते दुःख नशाये॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिमङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

(चौपाई)

जय जय सिद्ध परम सुखकारी। तुम गुण सुमरत कर्म निवारी।
विघ्नसमूह सहज हरतारे। मंगलमय मंगल करतारे॥

ॐ ह्रीं सिद्धमङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

(शार्दूलविक्रीडित)

राग-द्वेष महान सर्प शमने शम मंत्रधारी यती।
शत्रु-मित्र समान भाव करके भवताप हारी यती॥
मंगल सार महानकार अघहर सत्त्वानुकम्पी यती।
संयम पूर्ण प्रकार साध तप को संसारहारी यती॥

ॐ ह्रीं साधुमङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

(शङ्कर)

जिनधर्म है सुखकार जग में धरत भवभयवंत।
स्वर्ग-मोक्ष सुद्वार अनुपम धरे सो जयवन्त॥
सम्यक्त्व-ज्ञान-चरित्र लक्षण भजत जग में संत।
सर्वज्ञ रागविहीन वक्ता हैं प्रमाण महन्त॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

(झूलना)

चर्ण संस्पर्शते वन गिरि शुद्ध हो, नाम सत्तीर्थ को प्राप्त करते भए।
दर्श जिनका करे पूजते दुख हरे, जन्म निज सार्थ भविजीव मानत भए॥
देव तुम लेखके देव सब छोड़के, देव तुम उत्तमा सन्त ठानत भए।
पूजते आपको टालते ताप को, मोक्षलक्ष्मी निकट आप जानत भए॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

(भुजंगप्रयात)

दरश ज्ञान वैरी करम तीव्र आए,
नरक पशुगति मांहीं प्राणी पठाए।
तिन्हें ज्ञान असितें हनन नाथ कीना,
परम सिद्ध उत्तम भजूँ रागहीना॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

(चौपेया)

सूरज चन्द्र देवपति नरपति पद सरोज नित वंदे।
लोट-लोट मस्तक धर पग में पातक सर्व निकंदे॥
लोकमांहि उत्तम यतियन में जैनसाधु सुखकंदे।
पूजत सार आत्मगुण पावत होवत आप स्वच्छंदे॥

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

(सृग्विणी)

जो दया धर्म विस्तारता विश्व में,
नाश मिथ्यात्व अज्ञान कर विश्व में।
काम भाव दूर कर, मोक्षकर विश्व में,
सत्य जिनधर्म यह धार ले विश्व में॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३॥

(मरहठा)

भव-भ्रमण नशाया शरण कराया जीव-अजीवहिं खोज।
इन्द्रादिक देवा जाको पूजें जग गुण गावें रोज॥

ऐसे अर्हत् की शरणा आये, रत्नत्रय प्रकटाय।
जासे ही जन्म मरण भय नाशे नित्यानन्दी पाय॥

ॐ ह्रीं अर्हत्शरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥

(नाराच)

सुखी न जीव हो कभी जहाँ कि देह साथ है।
सदा हि कर्म आस्रवैं, न शांतता लहात है॥
जो सिद्ध को लखाय भक्ति एक मन करात है।
वही सुसिद्ध आप ही स्वभाव आत्म पात है॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५॥

(त्रोटक)

नहिं राग न द्वेष न काम धरें, भवदधि नौका भवि पार करें।
स्वारथ बिन सब हितकारक हैं, ते साधु जजूँ सुखकारक है॥

ॐ ह्रीं साधुशरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१६॥

(चामर)

धर्म ही सु मित्रसार साथ नाहिं त्यागता,
पापरूप अग्नि को सुमेघ सम बुझावता।
धर्म सत्य शर्ण यही जीव को सम्हारता,
भक्ति धर्म जो करें अनन्त ज्ञान पावता॥

ॐ ह्रीं धर्मशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१७॥

(दोहा)

पञ्च परमगुरु सार हैं, मङ्गल उत्तम जान।
शरणा राखन को बली, पूजूँ धरि उर ध्यान॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिप्रभृतिधर्मशरणांतप्रथमवलयस्थितसप्तदशजिनाधीशयागदेवताभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने दोषों के कारण एवं कर्त्ता तुम स्वयं ही हो,
विश्व में अन्य कोई नहीं।

(२)

भूतकाल में हुए २४ तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(पद्धरि)

भवि लोक शरण निर्वाणदेव, शिव सुखदाता सब देव देव।
पूजूँ शिवकारण मन लगाय, जासें भवसागर पार जाय।।१।।

ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

तज राग-द्वेष ममता विहाय, पूजक जन सुख अनुपम लहाय।
गुणसागर सागर जिन लखाय, पूजूँ मन-वच अर काय नाय।।२।।

ॐ ह्रीं सागरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

नय अर प्रमाण से तत्त्व पाय, निज जीव तत्त्व निश्चय कराय।
साधो तप केवलज्ञान दाय, ते साधु महा वन्दौं सुभाय।।३।।

ॐ ह्रीं महासाधुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

दीपक विशाल निज ज्ञान पाय, त्रैलोक लखे बिन श्रम उपाय।
विमलप्रभ निर्मलता कराय, जो पूजैं जिनको अर्घ लाय।।४।।

ॐ ह्रीं विमलप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

भवि शरण गेह मन शुद्धिकार, गावैं थुति मुनिगण यश प्रचार।
शुद्धाभदेव पूजूँ विचार, पाऊँ आतम गुण मोक्ष द्वार।।५।।

ॐ ह्रीं शुद्धाभदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

अंतर बाहर लक्ष्मी अधीश, इन्द्रादिक सेवत नाय शीस।
श्रीधर चरणा श्री शिव कराय, आश्रयकर्ता भवदधि तराय।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीधरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

जो भक्ति करें मन-वचन-काय, दाता शिवलक्ष्मी के जिनाय।
श्रीदत्त चरण पूजूँ महान, भवभय छूटे लहूँ अमल ज्ञान।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीदत्तजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

भामण्डल छवि वरणी न जाय, जहँ जीव लखैं भव सप्त आय।
मन शुद्ध करें सम्यक्तपाय, सिद्धाभ भजे भवभय नसाय॥८॥
ॐ ह्रीं सिद्धाभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२५॥

अमलप्रभ निर्मल ज्ञान धरे, सेवा में इन्द्र अनेक खड़े।
नित संत सुमंगल गान करें, निज आतमसार विलास करें॥९॥
ॐ ह्रीं अमलप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२६॥

उद्धार जिनं उद्धार करें, भव कारण भाँति विनाश करें।
हम डूब रहे भवसागर में, उद्धार करो निज आत्म रमें॥१०॥
ॐ ह्रीं उद्धारजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२७॥

अग्निदेव जिनं हो अग्निमई, अठ कर्मन ईंधन दाह दई।
हम असात तृणं कर दग्ध प्रभो, निजसम करलो जिनराज प्रभो॥११॥
ॐ ह्रीं अग्निदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२८॥

संयम जिन द्वैविध संयम को, प्राणी रक्षण इन्द्रिय दम को।
दीजे निश्चय निज संयम को, हरिये मम सर्व असंयम को॥१२॥
ॐ ह्रीं संयमजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२९॥

शिव जिनवर शाश्वत सौख्यकरी, निज आत्मविभूति स्वहस्त करी।
शिव वाञ्छक हम कर जोड़ नमें, शिवलक्ष्मी दो नहिं काहू नमें॥१३॥
ॐ ह्रीं शिवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥३०॥

पुष्पांजलि पुष्पनितें जजिये, सब कामव्यथा क्षण में हरिये।
निज शील स्वभावहि रमरहिये, निज आत्मजनित सुख को लहिये॥१४॥
ॐ ह्रीं पुष्पांजलिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥३१॥

उत्साह जिनं उत्साह करें, निज संयम चन्द्रप्रकाश करें।
समभाव समुद्र बढावत हैं, हम पूजत तव गुण पावत हैं॥१५॥
ॐ ह्रीं उत्साहजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥३२॥

चिन्तामणि सम चिन्ता हरिये, निज सम करिये भव तम हरिये।
परमेश्वर जिन ऐश्वर्य धरें, जो पूजें ताके विघ्न हरें॥१६॥
ॐ ह्रीं परमेश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥३३॥

ज्ञानेश्वर ज्ञान समुद्र पाय, त्रैलोक बिन्दु सम जहं दिखाय।
निज आतमज्ञान प्रकाशकार, वन्दूँ पूजूँ मैं बार-बार।।१७।।

ॐ ह्रीं ज्ञानेश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३४।।

कर्मों ने आत्म मलीन किया, तप अग्नि जला निज शुद्ध किया।
विमलेश्वर जिन मो विमल करो, मल ताप सकल ही शांत करो।।१८।।

ॐ ह्रीं विमलेश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३५।।

यश जिनका विश्व प्रकाश किया, शशिकर इव निर्मल व्याप्त किया।
भट मोह-अरी को शांत किया, यशधारी सार्थक नाम दिया।।१९।।

ॐ ह्रीं यशोधरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३६।।

समता भय क्रोध विनाश किया, जग कामरिपू को शान्त किया।
शुचिताधर शुचिकर नाथ जजूँ, श्री कृष्णमती जिन नित्य भजूँ।।२०।।

ॐ ह्रीं कृष्णमतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३७।।

शुचि ज्ञानमती जिन ज्ञान धरे, अज्ञान तिमिर सब नाश करे।
जो पूजें ज्ञान बढावत हैं, आतम अनुभव सुख पावत हैं।।२१।।

ॐ ह्रीं ज्ञानमतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३८।।

शुद्धमती जिनधर्म धुरन्धर, जानत विश्व सकल एकीकर।
जो शुद्ध बुद्धि होवे पूजें, भवि ध्यान करे निर्मल हूजे।।२२।।

ॐ ह्रीं शुद्धमतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३९।।

संसार विभूति उदास भये, शिवलक्ष्मी सार सुहात भए।
निज योग विशाल प्रकाश किया, श्रीभद्र जिनं शिववास लिया।।२३।।

ॐ ह्रीं श्रीभद्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४०।।

सत्वीर्य अनन्त प्रकाश किये, निज आतमतत्त्व विकास किये।
जिन वीर्य अनन्त प्रभाव धरें, जो पूजें कर्म-कलङ्क हरें।।२४।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१।।

(दोहा)

भूत भरत चौबीस जिन, गुण सुमरूँ हर बार।
मङ्गलकारी लोक में, सुख-शांति दातार।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे यागमण्डलेश्वरद्वितीयवलयोन्मुद्रितनिर्वाणाद्यनन्त-वीर्यान्तेभ्यो भूतकालवर्तिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(३)

वर्तमानकाल में हुए २४ तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(चाल)

मनु नाभि महीधर जाये, मरुदेवि उदर उतराए।
युग आदि सुधर्म चलाया, वृषभेष जजों वृष पाया ॥१॥

ॐ ह्रीं ऋषभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४२॥

जित शत्रु जने व्यवहारा, निश्चय आयो अवतारा।
सब कर्मन जीत लिया है, अजितेश सुनाम भया है ॥२॥

ॐ ह्रीं अजितजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४३॥

दृढराज सुयश आकाशे, सूरजसम नाथ प्रकाशे।
जग-भूषण शिवगति दानी, संभव जज केवलज्ञानी ॥३॥

ॐ ह्रीं सम्भवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४४॥

कपिचिह्न धरे अभिनंदा, भवि जीव करे आनन्दा।
जन्मन मरणा दुःख टारें, पूजें ते मोक्ष सिधारें ॥४॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दनजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४५॥

सुमतीश जजों सुखकारी, जो शरण गहें मतिधारी।
मति निर्मल कर शिव पावें, जग-भ्रमण हि आप मिटावें ॥५॥

ॐ ह्रीं सुमतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४६॥

धरणेश सुनृप उपजाए, पद्मप्रभ नाम कहाये।
है रक्त कमल पग चिह्ना, पूजत सन्ताप विछिन्ना ॥६॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४७॥

जिनचरणा रज सिर दीनी, लक्ष्मी अनुपम कर कीनी।
हैं धन्य सुपारश नाथा, हम छोड़ें नहिं जग साथा ॥७॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥४८॥

शशि तुम लखि उत्तम जग में, आया वसने तव पग में।
हम शरण गही जिन चरणा, चन्द्रप्रभ भवतम हरणा।।८।।
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४९।।

तुम पुष्पदंत जितकामी, है नाम सुविधि अभिरामी।
वन्दूँ तेरे जुग चरणा, जासे हो शिवतिय वरणा।।९।।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्तजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५०।।

श्री शीतलनाथ अकामी, शिवलक्ष्मीवर अभिरामी।
शीतल कर भव आतापा, पूजूँ हर मम संतापा।।१०।।
ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१।।

श्रेयांस जिना जुग चरणा, चित धारूँ मङ्गल करणा।
परिवर्तन पञ्च विनाशे, पूजनतें ज्ञान प्रकाशे।।११।।
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२।।

इक्ष्वाकु सुवंश सुहाया, वसुपूज्य तनय प्रगटाया।
इंद्रादिक सेवा कीनी, हम पूजें जिनगुण चीन्ही।।१२।।
ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३।।

कापिल्य पिता कृतवर्मा, माता श्यामा शुचिवर्मा।
श्री विमल परम सुखकारी, पूजा द्वै मल हरतारी।।१३।।
ॐ ह्रीं विमलनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४।।

साकेता नगरी भारी, हरिसेन पिता अविकारी।
सुर-असुर सदा जिनचरणा, पूजें भवसागर तरणा।।१४।।
ॐ ह्रीं अनन्तनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५।।

समवसृत द्वैविध धर्मा, उपदेशो श्री जिनधर्मा।
हितकारी तत्त्व बताए, जासे जन शिवमग पाये।।१५।।
ॐ ह्रीं धर्मनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६।।

कुरुवंशी श्री विश्वसेना, ऐरादेवी सुख देना।
श्री हस्तिनागपुर आये, जिन शांति जजों सुख पाए।।१६।।
ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७।।

श्री कुन्थु दयामय ज्ञानी, रक्षक षट्कायी प्राणी।
सुमरत आकुलता भाजे, पूजत ले दर्व सु ताजे॥१७॥
ॐ ह्रीं कुन्थुनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५८॥

शुभदृष्टी राय सुदर्शन, अर जाए त्रय भू पर्शन।
माता सेना उर रत्नं, धर चिह्न सुमन जज यत्नं॥१८॥
ॐ ह्रीं अरनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५९॥

नृप कुम्भ धरणि से जाए, जिन मल्लिनाथ मुनि पाये।
जिन यज्ञ विघ्न हरतारे, पूजूँ शुभ अर्घ्य उतारे॥१९॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६०॥

हरिवंश सु सुन्दर राजा, वप्रा माता जिनराजा।
मुनिसुव्रत शिवपथ कारण, पूजूँ सब विघ्न निवारण॥२०॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६१॥

मिथुलापुर विजय नरेन्द्रा, कल्याण पाँच कर इन्द्रा।
नमि धर्मामृत वर्षायो, भव्यन खेती अकुलायो॥२१॥
ॐ ह्रीं नमिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६२॥

द्वारावति विजयसमुद्रा, जन्मे यदुवंश जिनेन्द्रा।
हरिबल पूजित जिनचरणा, शंखांक अंबुधर वरणा॥२२॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६३॥

काशी विश्वसेन नरेशा, उपजायो पार्श्व जिनेशा।
पद्मा अहिपति पग वन्दे, रिपु कमठ मान निःकंदे॥२३॥
ॐ ह्रीं पार्श्वजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६४॥

सिद्धार्थराय त्रय ज्ञानी, सुत वर्द्धमान गुणखानी।
समवसृत श्रेणिक पूजे, तुम सम हैं देव न दूजे॥२४॥
ॐ ह्रीं वर्द्धमानजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६५॥

(दोहा)

वर्तमान चौबीस जिन, उद्धारक भवि जीव।
बिम्ब प्रतिष्ठा साधने, यजूँ परम सुख नीव॥

ॐ ह्रीं यागमण्डले मुख्यार्चिततृतीयवलयोन्मुद्रितऋषभादिवीरान्तेभ्यो वर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

४

भविष्यकाल में होनेवाले २४ तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(चौपई १५ मात्रा)

महापद्म जिन भावीनाथ, श्रेणिक जीव जगत विख्यात।
लक्ष्मी चञ्चल लिपटी आन, तव चरणा पूजूँ भगवान॥१॥

ॐ ह्रीं महापद्मजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६६॥

देव चतुर्विध पूजे पाय, माथ नाय सुरप्रभ जिनराय।
मैं सुमरण करके हरषाय, पूजूँ हर्ष न अङ्ग समाय॥२॥

ॐ ह्रीं सुरप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६७॥

सुप्रभ जिनके वंदू पाय, सेवकजन सुखसार लहाय।
करुणाधारी धन दातार, जो अविनाशी जिय सुखकार॥३॥

ॐ ह्रीं सुप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६८॥

मोक्ष राज्य देवे नहिं कोय, स्वयं आत्मबल लेवें सोय।
देव स्वयंप्रभ चरण नमाय, पूजूँ मन-वच ध्यान लगाय॥४॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६९॥

मन-वच-काय गुप्ति धरतार, तीव्र शस्त्र अघ मारणहार।
सर्वायुध जिन साम्य प्रचार, पूजत जग मङ्गल करतार॥५॥

ॐ ह्रीं सर्वायुधजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७०॥

कर्म शत्रु जीतन बलवान, श्री जयदेव परम सुखखान।
पूजत मिथ्यातम विघटाय, तत्त्व कुतत्त्व प्रकट दर्शाय॥६॥

ॐ ह्रीं जयदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७१॥

आत्मप्रभाव उदय जिन भयो, उदयप्रभ जिन तातैं थयो।
पूजत उदय पुण्य का होय, पापबन्ध सब डालें खोय॥७॥

ॐ ह्रीं उदयप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७२॥

प्रभा मनीशा बुद्धिप्रकाश, प्रभादेव जिन छूटी आश।
पूजत प्रभा ज्ञान उपजाय, संशयतिमिर सबै हट जाय॥८॥

ॐ ह्रीं प्रभादेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७३॥

भव्यभक्ति जिनराज कराय, सफल काल तिनका हो जाय।
देव उदंक पूज जो करैं, मनुषदेह अपनी वर करें॥९॥

ॐ ह्रीं उदङ्कदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७४॥

सुरविद्याधर प्रश्न कराय, उत्तर देत भरम टल जाय।
प्रश्नकीर्ति जिन यश के धार, पूजत कर्मकलंक निवार॥१०॥

ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७५॥

पापदलन तें जय को पाय, निर्मल यश जग में प्रकटाय।
गणधरादि नित वन्दन करें, पूजत पापकर्म सब हरैं॥११॥

ॐ ह्रीं जयकीर्तिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७६॥

बुद्धिपूर्ण जिन बन्दूँ पाय, केवलज्ञान ऋद्धि प्रकटाय।
चरण पवित्र करण सुखदाय, पूजत भवबाधा नश जाय॥१२॥

ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७७॥

हैं कषाय जग में दुःखकार, आत्मधर्म के नाशनहार।
निःकषाय होंगे जिनराज, तातें पूजूँ मङ्गल काज॥१३॥

ॐ ह्रीं निःकषायजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७८॥

कर्मरूप मल नाशनहार, आत्म शुद्ध कर्ता सुखकार।
विमलप्रभ जिन पूजूँ आय, जासे मन विशुद्ध हो जाय॥१४॥

ॐ ह्रीं विमलप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥७९॥

दीप्तवन्त गुण धारण हार, बहुलप्रभ पूजों हितकार।
आतमगुण जासैं प्रगटाय, मोहतिमिर क्षण में विनशाय॥१५॥

ॐ ह्रीं बहुलप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८०॥

जल नभ रत्न विमल कहवाय, सो अभूत व्यवहार वशाय।
भावकर्म अठकर्म महान, हत निर्मल जिन पूजूँ जान॥१६॥

ॐ ह्रीं निर्मलजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥८१॥

मन-वच-काय गुप्ति धरतार, चित्रगुप्ति जिन हैं अविकार।
पूजूँ पद तिन भाव लगाय, जासें गुप्तित्रय प्रगटाय।।१७।।

ॐ ह्रीं चित्रगुप्तिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८२।।

चिरभव भ्रमण करत दुःख सहा, मरण समाधि न कबहूँ लहा।
गुप्ति समाधि शरण को पाय, जजत समाधि प्रगट हो जाय।।१८।।

ॐ ह्रीं समाधिगुप्तिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८३।।

अन्य सहाय बिना जिनराज, स्वयं लेय परमातम राज।
नाथ स्वयंभू मग शिवदाय, पूजत बाधा सब टल जाय।।१९।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८४।।

मनदर्प के नाशनहार, जिन कंदर्प आत्मबल धार।
दर्प अयोग बुद्धि के काज, पूजूँ अर्घ लिए जिनराज।।२०।।

ॐ ह्रीं कंदर्पजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८५।।

गुण अनंत के नाम अनंत, श्री जयनाथ धरम भगवंत।
पूजूँ अष्टद्रव्य कर लाय, विघ्न सकल जासे टल जाय।।२१।।

ॐ ह्रीं जयनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८६।।

पूज्य आत्मगुण धर मलहार, विमलनाथ जग परम उदार।
शील परम पावन के काज, पूजूँ अर्घ लेय जिनराज।।२२।।

ॐ ह्रीं विमलजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८७।।

दिव्यवाद अर्हन्त अपार, दिव्यध्वनि प्रगटावन हार।
आत्मतत्त्व ज्ञाता सिरताज, पूजूँ अर्घ लेय जिनराज।।२३।।

ॐ ह्रीं दिव्यवादजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८८।।

शक्ति अपार आत्म धरतार, प्रगट करें जिनयोग संभार।
वीर्य अनन्तनाथ को ध्याय, नतमस्तक पूजूँ हरषाय।।२४।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८९।।

(दोहा)

तीर्थराज चौबीस जिन, भावी भव हरतार।
बिम्ब प्रतिष्ठा कार्य में, पूजूँ विघ्न निवार।।

ॐ ह्रीं बिम्बप्रतिष्ठोद्यापने मुख्यपूजार्हचतुर्थवलयोन्मुद्रितानागतचतुर्विंशतिमहापद्मा-द्यनंतवीर्यान्तेभ्यो जिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(५)

ढाई द्वीप के पाँच विदेह क्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(सृग्विणी)

मोक्षनगरी पतिं हंस राजा सुतं, पुण्डरीका पुरी राजते दुखहतम्।
सीमन्धर जिना पूजते दुखहना, फेर होवे न या जगत में आवना ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमन्धरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९०॥

धर्मद्वय वस्तुद्वय नय-प्रमाणद्वयं, नाथ जुगमन्धरं कथितं व्रतद्वयं।
भूपश्री रुह सुतं ज्ञानकेवलगतं, पूजिये भक्ति से कर्मशत्रु हतं ॥२॥

ॐ ह्रीं जुगमन्धरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९१॥

भूप सुग्रीव विजया से जाए प्रभू, एण चिह्नं धरे जानते तीन भू।
स्वच्छ सीमापुरी राजते बाहुजिन, पूजिये साधु को रागरुष दोष बिन ॥३॥

ॐ ह्रीं बाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९२॥

वंशनभ निर्मलं सूर्य सम राजते, कीर्तिमय बन्ध बिन क्षेत्र शुभ शोभते।
मात सुन्दर सुनन्दा सु भवभयहतं, पूजते बाहु शुभ भवभय निर्गतं ॥४॥

ॐ ह्रीं सुबाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९३॥

जन्म अलकापुरी देवसेनात्मजं, पुण्यमय जन्मए नाथ सञ्जातकं।
पूजिये भाव से द्रव्य आठों लिये, और रस त्याग कर आत्मरस को पिये ॥५॥

ॐ ह्रीं संजातकजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९४॥

जन्मपुर मङ्गला चन्द्र चिह्नं धरे, आप से आप ही भव उदधि उद्धरे।
प्रभस्वयं पूजते विघ्न सारे टरे, होय मङ्गल महा कर्मशत्रू डरे ॥६॥

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९५॥

वीरसेना सुमाता सुसीमापुरी, देवदेवी परमभक्ति उर में धरी।
देव ऋषभाननं आननं सार है, देखते पूजते भव्य उद्धार है ॥७॥

ॐ ह्रीं ऋषभाननजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९६॥

वीर्य का पार ना ज्ञान का पार ना, सुक्ख का पार ना ध्यान का पार ना।
आप में राजते शान्तमय छाजते, अन्त बिन वीर्य को पूज अघ भाजते॥८॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९७॥

अंकवृष धारते धर्मवृष्टी करें, भाव सन्तापहर ज्ञानसृष्टी करें।
नाथ सूरिप्रभं पूजते दुखहनं, मुक्तिनारी वरं पादुपे निजधनं॥९॥

ॐ ह्रीं सूरिप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९८॥

पुण्डरं पुरवरं मात विजया जने, वीर्य राजा पिता ज्ञानधारी तने।
जुग्मचरणं भजे ध्यान इक्तान हो, जिनविशालप्रभ पूज अघहान हो॥१०॥

ॐ ह्रीं विशालप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९९॥

वज्रधर जिनवरं पद्मरथ के सुतं, शंखचिह्नं धरे मान रुष भय गतं।
मात सरसुति बड़ी इन्द्र सम्मानिता, पूजते जास को पाप सब भाजता॥११॥

ॐ ह्रीं वज्रधरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१००॥

चन्द्र आनन जिनं चन्द्र को जयकरं, कर्म विध्वंसकं साधुजन शमकरं।
मात करुणावती नग्र पुण्ड्रीकिनी, पूजते मोह की राजधानी छिनी॥१२॥

ॐ ह्रीं चन्द्राननजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०१॥

श्रीमती रेणुका मात है जास की, पद्मचिह्नं धरे मोह को मात दी।
चन्द्रबाहुजिनं ज्ञानलक्ष्मी धरं, पूजते जास के मुक्तिलक्ष्मी वरं॥१३॥

ॐ ह्रीं चन्द्रबाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०२॥

नाथ निज आत्मबल मुक्तिपथ पग दिया, चन्द्रमा चिह्नधर मोहतम हर लिया।
बलमहाभूपती हैं पिता जास के, गमभुजं नाथ पूजें न भव में छके॥१४॥

ॐ ह्रीं भुजङ्गमजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०३॥

मात ज्वाला सती सेन गल भूपती, पुत्र ईश्वर जने पूजते सुरपती।
स्वच्छ सीमानगर धर्म विस्तार कर, पूजते ही प्रगट बोधिमय भास्कर॥१५॥

ॐ ह्रीं ईश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०४॥

नाथ नेमिप्रभं नेमि हैं धर्मरथ, सूर्यचिह्नं धरे चालते मुक्तिपथ।
अष्ट द्रव्यों लियें पूजते अघ हने, ज्ञान वैराग्य से बोधि पावें घने॥१६॥

ॐ ह्रीं नेमिप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०५॥

वीरसेना सुतं कर्मसेना हतं, सेनशूरं जिनं इन्द्र से वन्दितं।
पुण्डरीकं नगर भूमिपालक नृपं, हैं पिता ज्ञानसूरा करूँ मैं जपं॥१७॥

ॐ ह्रीं वीरसेनजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०६॥

नगर विजया तने देव राजा पती, अर उमामात के पुत्र संशय हती।
जिन महाभद्र को पूजिये भद्रकर, सर्व मङ्गल करै मोह सन्ताप हर॥१८॥

ॐ ह्रीं महाभद्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०७॥

है सुसीमा नगर, भूप भूति तवं, मात गङ्गा जने द्योतते त्रिभुवनं।
लांक्षणं स्वस्तिकं जिनयशोदेव को, पूजिये वन्दिये मुक्ति गुरुदेव को॥१९॥

ॐ ह्रीं देवयशोजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०८॥

पद्मचिह्नं धरे मोह को वश करे, पुत्र राजा कनक क्रोध को क्षय करे।
ध्यान मण्डित महावीर्य अजितं धरे, पूजते जास को कर्मबन्धन टरे॥२०॥

ॐ ह्रीं अजितवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०९॥

(दोहा)

राजत बीस विदेह जिन, कबहिं साठ शत होय।
पूजत वन्दत जास को, विघ्न सकल क्षय होय॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवे मुख्यपूजार्हपञ्चमवलयोन्मुद्रितविदेहक्षेत्रे सुषष्टि-सहितैकशतजिनेशसंयुक्तनित्यविहरमाणविंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये।
हाँ जी हाँ हम आये आये॥टेक॥
देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये।
पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये॥१॥
जन्म-मरण नित करते-करते, काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये॥२॥
भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये॥३॥
अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
'पंकज' की प्रभु यही बीनती, चरण-शरण मिल जाये॥४॥

६

छत्तीस गुणयुक्त आचार्य परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

(भुजङ्गप्रयात)

हटाये अनन्तानुबंधी कषायें,
करण से हैं मिथ्यात तीनों खपाये।
अतीचार पच्चीस को हैं बचाये,
सु आचार दर्शन परम गुरु धराये॥१॥

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११०॥

न संशय विपर्यय न है मोह कोई,
परम ज्ञान निर्मल धरे तत्त्व जोई।
स्व-पर ज्ञान से भेदविज्ञान धारे,
सु आचार ज्ञानं स्व-अनुभव सम्हारे॥२॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१११॥

सुचारित्र व्यवहार निश्चय सम्हारे,
अहिंसादि पाँचों व्रत शुद्ध धारे।
अचल आत्म में शुद्धता सार पाए,
जजूँ पद गुरु के दरब अष्ट लाए॥३॥

ॐ ह्रीं चारित्राचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११२॥

तपें द्वादशों तप अचल ज्ञानधारी,
सहें गुरु परीषह सुसमता प्रचारी।
परम आत्मरस पीवते आप ही तें,
भजूँ मैं गुरु छूट जाऊँ भवों तें॥३॥

ॐ ह्रीं तपाचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११३॥

परम ध्यान में लीनता आप कीनी,
न हटते कभी घोर उपसर्ग दीनी।
सु आतमबली वीर्य की ढाल धारी,
परम गुरु जजूँ अष्ट द्रव्यं सम्हारी॥५॥

ॐ ह्रीं वीर्याचारसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११४॥

तपः अनशनं जो तपें धीर-वीरा,
तजें चारविध भोजनं शक्ति धीरा।
कभी मास पक्षं कभी चार त्रय दो,
सु उपवास करते जजूँ आप गुण दो॥६॥

ॐ ह्रीं अनशनतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११५॥

सु ऊनोदरी तप महास्वच्छकारी,
करे नींद आलस्य का नहिं प्रचारी।
सदा ध्यान की सावधानी सम्हारे,
जजूँ मैं गुरु को करम घन विदारैं॥७॥

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११६॥

कभी भोजना हेतु पुर में पधारें,
तभी दृढप्रतिज्ञा गुरु आप धारें।
यही वृत्ति-परिसंख्य तप आशहारी,
भजूँ जिन गुरु जो कि धारें विचारी॥८॥

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यानपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११७॥

कभी छह रसों को कभी चार त्रय दो,
तजें राग वर्जन गुरु लोभजित हो।
धरें लक्ष्य आतम सुधा सार पीते,
जजूँ मैं गुरु को सभी दोष बीते॥९॥

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११८॥

कभी पर्वतों पर गुहा वन मशाने,
धरें ध्यान एकांत में एकताने।

धरें आसना दृढ अचल शांतिधारी,
जजूँ मैं गुरु को भरम तापहारी॥१०॥

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११९॥

ऋतु उष्ण पर्वत शरद्रितु नदी तट,
अधोवृक्ष बरसात में याकि चउ पथ।
करें योग अनुपम सहें कष्ट भारी,
जजूँ मैं गुरु को सुसम दम पुकारी॥११॥

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपोभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२०॥

करें दोष आलोचना गुरु सकाशे,
भरैं दण्ड रुचिसों गुरु सो प्रकाशे।
सुतप अन्तरङ्ग प्रथम शुद्ध कारी,
जजूँ मैं गुरु को स्व आतम विहारी॥१२॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपोभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२१॥

दरश ज्ञान चारित्र आदि गुणों में,
परम पदमयी पाँच परमेष्ठियों में।
विनय तप धरें शल्यत्रय को निवारें,
हमें रक्ष श्री गुरु जजूँ अर्घ धारें॥१३॥

ॐ ह्रीं विनयतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२२॥

यती संघ दस विध यदि रोग धारे,
तथा खेद पीड़ित मुनी हों बिचारे।
करें सेव उनकी दया चित्त ठाने,
जजूँ मैं गुरु को भरम ताप हाने॥१४॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तितपोभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२३॥

करें बोध निजतत्त्व परतत्त्व रुचि से,
प्रकाशें परम तत्त्व जग को स्वमति से।
यही तप अमोलक करम को खिपावे,
जजूँ मैं गुरु को कुबोधं नशावे॥१५॥

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२४॥

अपावन विनाशीक निज देह लखके,
तजें सब ममत्व सुधा आत्म चखके।
करें तप सु व्युत्सर्ग सन्तापहारी,
जजूँ मैं गुरु को परम पद विहारी।।१६।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपोऽभियुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२५।।

जु है आर्तरौद्र कुध्यानं कुज्ञानं,
उन्हें नहिं धरें ध्यान धर्म प्रमाणं।
करें शुद्ध उपयोग कर्मप्रहारी,
जजूँ मैं गुरु को स्वअनुभव सम्हारी।।१७।।

ॐ ह्रीं ध्यानावलम्बननिरताचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२६।।

करैं कोय बाधा वचन दुष्ट बोले,
क्षमा ढाल से क्रोध मन में न कुछ ले।
धरैं शक्ति अनुपम तदपि साम्यधारी,
जजूँ मैं गुरु को स्वधर्मप्रचारी।।१८।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमापरमधर्मधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२७।।

धरै मद न तप ज्ञान आदी स्व मन में,
नरम चित्त से ध्यान धारें सु वन में।
परम मार्दवं धर्म सम्यक् प्रचारी,
जजूँ मैं गुरु को सुधा ज्ञान धारी।।१९।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मधुरन्धराचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२८।।

परम निष्कपट चित्त भूमी सम्हारे,
लता धर्म बंधन करें शान्ति धारें।
करम अष्ट हन मोक्ष फल को विचारें,
जजूँ मैं गुरु को श्रुत ज्ञान धारें।।२०।।

ॐ ह्रीं उत्तमार्जवधर्मपरिपुष्टाचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२९।।

न रुष लोभ भय हास्य नहिं चित्त धारें,
वचन सत्य आगम प्रमाणे उचारें।

परम हितमित मिष्ट वाणी प्रचारी,
जजूँ मैं गुरु को सु समता विहारी॥२१॥
ॐ ह्रीं सत्यधर्मप्रतिष्ठिताचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३०॥

न है लोभ राक्षस न तृष्णा पिशाची,
परम शौच धारें सदा जो अजाची।
करैं आत्म शोभा स्व संतोष धारी,
जजूँ मैं गुरु को भवातापहारी॥२२॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मधारकाचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३१॥

न संयम विराधें करैं प्राणिरक्षा,
दमैं इन्द्रियों को मिटावैं कु-इच्छा।
निजानंद राचें खरे संयमी हो,
जजूँ मैं गुरु को यमी अरु दमी हो॥२३॥
ॐ ह्रीं उत्तमद्विविधसंयमपात्राचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३२॥

तपो भूषणं धारते यदि विरागी,
परमधाम सेवी गुणग्राम त्यागी।
करें सेव तिनकी सु इन्द्रादि देवा,
जजूँ मैं चरण को लहूँ ज्ञान मेवा॥२४॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपोऽतिशयधर्मसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३३॥

अभयदान देते परम ज्ञान दाता,
सुधर्मोषधी बांटते आत्म त्राता।
परम त्याग धर्मी परम तत्त्व मर्मी,
जजूँ मैं गुरु को शमूँ कर्म गर्मी॥२५॥
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मप्रवीणाचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३४॥

न परवस्तु मेरी न संबंध मेरा,
अलख गुण निरञ्जन शमी आत्म मेरा।
यही भाव अनुपम प्रकाशे सुध्यानं,
जजूँ मैं गुरु को लहूँ शुद्ध ज्ञानं॥२६॥
ॐ ह्रीं उत्तमार्किंचनधर्मसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३५॥

परम शील धारी निजाराम चारी,
न रंभा सु नारी करैं मन विकारी।
परम ब्रह्मचर्या चलत एक तानं,
जजूँ मैं गुरु को सभी पापहानं॥२७॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्ममहनीयाचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३६॥

मनः गुप्ति धारी विकल्प प्रहारी,
परम शुद्ध उपयोग में नित विहारी।
निजानन्द सेवी परम धाम बेवी,
जजूँ मैं गुरु को धरम ध्यान टेवी॥२८॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३७॥

वचन गुप्तिधारी महासौख्यकारी,
करें धर्म उपदेश संशय निवारी।
सुधा सार पीते धरम ध्यान धारी,
जजूँ मैं गुरु को सदा निर्विकारी॥२९॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३८॥

अचल ध्यान धारी खड़ी मूर्ति प्यारी,
खुजावें मृगी अंग अपना सम्हारी।
धरी काय गुप्ति निजानन्द धारी,
जजूँ मैं गुरु को सु समता प्रचारी॥३०॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३९॥

परम साम्यभावं धरें जो त्रिकालं,
भरम राग द्वेषं मदं मोह टालं।
पिवैं ज्ञान रस शांति समता प्रचारी,
जजूँ मैं गुरु को निजानंद धारी॥३१॥

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यककर्मधारि आचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४०॥

करैं वन्दना सिद्ध अरहन्त देवा,
मगन तिन गुणों में रहें सार लेवा।

उन्हीं-सा निजातम जु अपना विचारें,
जजूँ मैं गुरु को धरम ध्यान धारें॥३२॥

ॐ ह्रीं वन्दनावश्यकनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४१॥

करें संस्तवं सिद्ध अरहंत देवा,
करें गान गुण का लहें ज्ञान मेवा।
करें निर्मलं भाव को पाप नाशें,
जजूँ मैं गुरु को सु समता प्रकाशें॥३३॥

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसंयुक्ताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४२॥

लगे दोष तन मन वचन के फिरन से,
कहें गुरु समीपे परम शुद्ध मन से।
करें प्रतिक्रमण अर लहें दण्ड सुख से,
जजूँ मैं गुरु को छुटूँ सर्व दुःख से॥३४॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४३॥

करें भावना आत्म की ज्ञान ध्यावें,
पढे शास्त्र रुचि से सुबोधं बढावें।
यही ज्ञान सेवा करम मल छुड़ावे,
जजूँ मैं गुरु को अबोधं हटावे॥३५॥

ॐ ह्रीं स्वाध्यायावश्यककर्मनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४४॥

तजें सब ममत्वं शरीरादि सेती,
खड़ें आत्म ध्यावे छुटे कर्म रेती।
लहैं ज्ञान भेदं सु व्युत्सर्ग धारें,
जजूँ मैं गुरु को स्व-अनुभव विचारें॥३६॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गावश्यकनिरताचार्यपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४५॥

(दोहा)

गुण अनन्त धारी गुरु, शिवमग चालनहार।
संघ सकल रक्षा करे, यज्ञ विघ्न हरतार॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोद्यापने पूजार्हमुख्यषष्टवलयोन्मुद्रिताचार्यपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

७

पच्चीस गुणयुक्त उपाध्याय परमेष्ठी के लिए अर्घ्य

(द्रुतविलम्बित)

प्रथम अङ्ग कथत आचार को, सहस्र अष्टादश पद धारतो।
पढ़त साधु सु अन्य पढ़ावते, जजूँ पाठक को अति चाव से॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रपदधारकाराचाङ्गधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं॥१४६॥

द्वितीय सूत्रकृतांग विचारते, स्व पर तत्त्व सु निश्चय लावते।
पद छत्तीस हजार विशाल है, जजूँ पाठक शिष्य दयालु हैं॥२॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत्सहस्रपदसंयुक्तसूत्रकृतांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं॥१४७॥

तृतीय अङ्ग स्थान छः द्रव्य को, पद हजार बियालिस धारतो।
एक द्वै त्रय भेद बखानता, जजूँ पाठक तत्त्व पिछानता॥३॥

ॐ ह्रीं द्विचत्वारिंशत्पदसंयुक्तस्थानांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं॥१४८॥

द्रव्य क्षेत्र समय अर भाव से, साम्य झलकावे विस्तार से।
लख सहस्र चौंसठ पद धारता, जजूँ पाठक तत्त्व विचारता॥४॥

ॐ ह्रीं एकलक्षषष्टिपदन्याससहस्रसमवायांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१४९॥

प्रश्न साठ हजार बखानता, सहस अठविंशति पद धारता।
द्विलख और विशद परकाशता, जजूँ पाठक ध्यान सम्हारता॥५॥

ॐ ह्रीं द्विलक्षाष्टाविंशतिसहस्रपदरंजितव्याख्याप्रज्ञप्त्यंगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो-ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५०॥

धर्मचर्चा प्रश्नोत्तर करे, पाँच लाख सहस छप्पन धरे।
पद सु मध्यम ज्ञान बढ़ावता, जजूँ पाठक आतम ध्यावता॥६॥

ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत्सहस्रपदसङ्गतज्ञातृधर्मकथांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो-ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५१॥

व्रत सुशील क्रिया गुण श्रावका, पद सुलक्ष इग्यारह धारका।
सहस सप्तति और मिलाइये, जजूँ पाठक ज्ञान बढ़ाइये॥७॥

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्ततिसहस्रपदशोभितोपासकाध्ययनांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो-ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५२॥

दश यती उपसर्ग सहन करे, समय तीर्थंकर शिवतिय वरे।
सहस अट्ठाईस लख तेइसा, पद यजूँ पाठक जिन सारिसा॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिंविंशतिलक्षअष्टाविंशतिसहस्रपदशोभितांत:दशाङ्गधारकोपाध्याय-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५३॥

दश यती उपसर्ग सहन करे, समय तीर्थ अनुसार अवतरे।
सहस चव चालिस लख बानवे, पद धरें पाठक बहु ज्ञान दे॥९॥

ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्षचतुर्चत्वारिंशत्पदशोभितानुत्तरोपपादकांगधारकोपाध्याय-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५४॥

प्रश्नव्याकरणांग महान ये, सहस्र सोलह लाख तिरानवे।
पद धरे सुख दु:ख विचारता, जजूँ पाठक धर्म प्रचारता॥१०॥

ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षषोडशसहस्रपदशोभितप्रश्नव्याकरणांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो-ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५५॥

सहस चवरसि कोटि एक पद, धरत सूत्रविपाक सुज्ञान पद।
करम-बन्ध उदय सत्वादिक कथं, जजूँ पाठक जीते कामरथं॥११॥

ॐ ह्रीं एककोटिचतुरशीतिसहस्रपदशोभितविपाकसूत्रांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो-ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१५६॥

कथत षट्द्रव्यों की सारता, एककोटि पद को धारता।
पूर्व है उत्पाद सु जानकर, जजूँ पाठक निज रुचि ठान कर॥१२॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१५७॥

सुनय दुर्नय आदि प्रमाणता, नवति छह कोटि पद धारता।
पूर्व अग्रायण विस्तार है, जजूँ पाठक भवदधि तार है॥१३॥

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१५८॥

द्रव्य गुण पर्यय बल कथत है, लाख सत्तर पद यह धरत है।
पूर्व है अनुवाद सु वीर्य का, जजूँ पाठक यति पद धारका ॥१४॥

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः ऽर्घ्यं ॥१५९॥

नास्ति अस्ति प्रवाद सुअंग है, साठ लख मध्यम पद संग है।
सप्तभंग कथत जिनमार्ग कर, जजूँ पाठक मोह निवारकर ॥१५॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६०॥

ज्ञान आठ सुभेद प्रकाशता, एक कम कोटी पद धारता।
सतत ज्ञानप्रवाद विचारता, जजूँ पाठक संशय टारता ॥१६॥

ॐ ह्रीं आत्मज्ञानप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६१॥

कथत सत्य-असत्य सुभाव को, कोटि अरु पद धारी पूर्व को।
पढ़त सत्यप्रवाद जिनागमा, जजूँ पाठक ज्ञाता आगमा ॥१७॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६२॥

सकल जीव स्वरूप विचारता, कोटि पद छब्बीस सुधारता।
पढ़त आत्मप्रवाद महान को, जजूँ पाठक दुर्मति हान को ॥१८॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६३॥

कर्मबंध विधान बखानता, कोटि पद अस्सीलाख धारता।
पठत कर्म प्रवाद सुध्यान से, जजूँ पाठक शुद्ध विधान से ॥१९॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६४॥

नय प्रमाण सुन्यास विचारता, लाख पद चौरासी धारता।
पूर्व प्रत्याहार जु नाम है, जजूँ पाठक रमताराम है ॥२०॥

ॐ ह्रीं प्रत्याहारपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६५॥

मंत्र विद्याविधि को साधता, लक्ष दशकोटि पद धारता।
पूर्व है अनुवाद सुज्ञान का, जजूँ पाठक सन्मति दायका ॥२१॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१६६॥

पुरुष त्रेशठ आदि महान का, कथत वृत्त सकल कल्याण का।
कोटि छब्बीस पद को धारता, जजूँ पाठक अघ सब टारता॥२२॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१६७॥

कथत भेद सुवैद्यक शास्त्र का, कोटि तेरह पद सुधारका।
पूर्व नाम सुप्राण प्रवाद है, जजूँ पाठक सुर नत पाद है॥२३॥

ॐ ह्रीं प्राणप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१६८॥

कथत छंदकला संगीत को, कोटि नव पद मध्यम रीत को।
पूर्व नाम सु क्रिया विशाल है, जजूँ पाठक दीनदयाल है॥२४॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१६९॥

तीन लोक विधान विचारता, कोटि अर्द्ध सु द्वादश धारता।
पूर्व बिन्दु त्रिलोक विशाल है, जजूँ पाठक करत निहाल है॥२५॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यबिन्दुपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१७०॥

(दोहा)

अंग इकादश पूर्व दश, चार-सुज्ञायक साध।
जजूँ गुरु के चरण दो, यजन सु अव्याबाध॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् विम्बप्रतिष्ठामहोत्सवविधाने मुख्यपूजार्हसप्तमवलयोन्मुद्रित-द्वादशांगश्रुतदेवताभ्यस्तदाराधकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यश्च पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनि राजत समता संग, कायोत्सर्ग समाहित अंग॥टेक॥
करतैं नहिं कछु कारज तातैं, आलम्बित भुज कीन अभंग।
गमन काज कछु है नहिं तातैं, गति तजि छाके निज रस रंग॥१॥
लोचन तैं लखिवो कछु नाहीं, तातैं नाशादृग अचलंग।
सुनिये जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकन्त-सुचंग॥२॥
तह मध्याह्न माहिं निज ऊपर, आयो उग्र प्रताप पतंग।
कैधौं ज्ञान पवन बल प्रज्वलित, ध्यानानल सौं उछलि फुलिंग॥३॥
चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ, परमानन्द पियूष तरंग।
'भागचन्द' ऐसे श्री गुरु-पद, वंदत मिलत स्वपद उत्तंग॥४॥

(८)

अट्ठाईस गुणयुक्त साधुपरमेष्ठी के लिए अर्घ्य

(नाराच)

तजे सु राग-द्वेष भाव शुद्धभाव धारते,
परम स्वरूप आपका समाधि से विचारते।
करैं दया सुप्राणि जंतु चर-अचर बचावते,
जजों यति महान प्राणिरक्षव्रत निभावते ॥१॥

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७१॥

असत्य सर्व त्याग वाक् शुद्धता प्रचारते,
जिनागमानुकूल तत्त्व सत्य सत्य धारते।
अनेक नय प्रकार से वचन विरोध टारते,
जजों यति महान सत्यव्रत सदा सम्हारते ॥२॥

ॐ ह्रीं अनृतपरित्यागमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७२॥

अचौर्यव्रत महान धार शौचभाव भावते,
जजों यती सदा सुज्ञान ध्यान मन रमावते।
सुतृप्त हैं महान आत्मजन्य सौख्य पावते,
जजौं यती सदा सु ज्ञान ध्यान मन रमावते ॥३॥

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७३॥

सु ब्रह्मचर्य व्रत महान धार शील पालते,
न काष्ठमय कलत्र देव भामिनी विचारते।
मनुष्यणी सु पशुतियां कभी न मन रमावते,
जजों यती न स्वप्नमाहिं शील को गमावते ॥४॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७४॥

न राग द्वेष आदि अंतरंग संग धारते,
न क्षेत्र आदि बाह्य संग रंच भी सम्हारते।
धरैं सु साम्यभाव आप-पर पृथक् विचारते,
जजों यती ममत्व हीन साम्यता प्रचारते ॥५॥

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७५॥

सु चार हाथ भूमि अग्र देख पाय धारते,
न जीवघात होय यत्न सार मन विचारते।
सु चारमास वृष्टि काल एक थल विराजते,
जजूँ यती सु सन्मती जो ईर्या सम्हारते ॥६॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७६॥

न क्रोध लोभ हास्य भय कराय साम्य धारते,
वचन सुमिष्ट इष्ट मित प्रमाण ही निवारते।
यथार्थ शास्त्र ज्ञायका सुधा सु आत्म पीवते,
जजूँ यतीश द्रव्य आठ तत्त्व माहिं जीवते ॥७॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७७॥

महान दोष छ्यालिसों सु टार ग्रास लेत हैं,
पड़े जु अन्तराय तुर्त ग्रास त्याग देत हैं।
मिले जु भोग पुण्य से उसी में सब्र धारते,
जजूँ यतीश काम जीत रागद्वेष टारते ॥८॥

ॐ ह्रीं एषणासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७८॥

धरें उठाय वस्तु देख शोध खूब लेत हैं,
न जन्तु कोय कष्ट पाय, इस विचार लेत हैं।
अतः सु मोर पिच्छिका सुमार्जिका सुधारते,
जजूँ यती दयानिधान, जीव दुःख टारते ॥९॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१७९॥

धरैं जु अङ्ग नेत्र नासिकादि मल सु देख के,
न होय जंतु घात थान शुद्धता सुपेख के।
परम दया विचार सार व्युत्सर्ग साधते,
जजूँ यतीश चाहदाह शांतिपय बुझावते ॥१०॥
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिपालकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१८०॥

न उष्ण शीत मृदु कठिन गुरु लघू सपर्शते,
न चीकनेऽरु रूक्ष वस्तु से मिलाप पावते।
न रागद्वेष को करें समान भाव धारते,
जजूँ यती दमे सपर्श ज्ञान भाव सारते ॥११॥
ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१८१॥

न मिष्ट तिक्त लौण कटुक, आत्म स्वाद चाहते,
करत न रागद्वेष शौच भाव को निवाहते।
सु जान के सुभाव पुद्गलादि साम्य धारते,
जजूँ यती सदा जु चाह दाह को निवारते ॥१२॥
ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१८२॥

जगत पदार्थ पुद्गलादि आत्म गुण न त्यागते,
सुगन्ध गन्ध दुःखदाय साधु जहाँ पावते।
न रागद्वेष धार घ्राण का विषय निवारते,
जजूँ यतीश एकरूप शांतता प्रचारते ॥१३॥
ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१८३॥

सफेद लाल कृष्ण पीत नील रंग देखते,
स्वरूप या कुरूप देख वस्तुरूप पेखते।
करें न रागद्वेष साम्यभाव को सम्हारते,
जजूँ यती महान चक्षु राग को निवारते ॥१४॥
ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥१८४॥

करे थुती बनाय एक गद्य पद्य सारते,
कहे असभ्य बात एक क्रूरता प्रसारते।
न रोष-तोष धारते पदार्थ को विचारते,
जजूँ यती महान कर्ण रागद्वेष टारते ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियविकारविरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१८५॥

धरें महान शांतता न राग-द्वेष भावते,
चलें नहीं सुयोग से विराट कष्ट आवते।
तरें समुद्र कर्म को जहाज ध्यान खेवते,
यजूँ यती स्वरूप मांहि बैठ तत्त्व बेवते॥१६॥

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१८६॥

करें त्रिकाल वन्दना सु पूज्य सिद्ध साधु को,
विचार बार-बार आत्म शुद्ध गुण स्वभाव को।
करें जु नाश कर्म जो कि मोक्षमार्ग रोकते,
यजूँ यती महान माथ नाय-नाय ढोकतें॥१७॥

ॐ ह्रीं वन्दनावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं।१८७॥

करें सुगान गुण अपार तीर्थनाथ देवके,
मनपिशाच को विडार स्वात्मसार सेवके।
बनाय शुद्ध भावमाल आत्मकण्ठ डारते,
जजूँ यती महान कर्म आठ चूर डारते॥१८॥

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१८८॥

करें विचार दोष होय नित्य कार्य साधते,
क्षमा कराय सर्व जन्तु जाति कष्ट पावते।
आलोचना सुकृत्य से स्वदोष को मिटावते,
जजूँ यती महान ज्ञान-अम्बु में नहावते॥१९॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१८९॥

रखैं सुबांध मन कपी महान है जु नटखटा,
बनाय सांकलान शास्त्रपाठ में जुटावता।
धरैं स्वभाव शुद्ध नित्य आत्म को रमावते,
जजूँ यती उदय महान ज्ञानसूर्य पावते॥२०॥

ॐ ह्रीं स्वाध्यायावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९०॥

तजैं ममत्व काय का इसे अनित्य जानते,
जु कांचखण्ड मृत्तिका सु पिण्ड सम प्रमाणते।
खड़े बनी गुफा महा स्व-ध्यान सार धारते,
जजूँ यती महान मोह-राग-द्वेष टारते॥२१॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकगुणधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९१॥

करैं शयन सु भूमि में कठोर कंकड़ानि की,
कभी नहीं विचारते, पलंग खाट पालकी।
मुहूर्त एक भी नहीं गमावते कुनींद में,
जजूँ यतीश सोचते सु आत्मतत्त्व नींद में॥२२॥

ॐ ह्रीं भूशयननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९२॥

करैं नहीं नहान सर्व राग देह का हते,
पसेव ग्रीष्म में पड़ें न शीत-अम्बु चाहते।
बनी प्रबल पवित्र और मन्त्र शुद्ध धारते,
जजूँ यतीश शुद्ध पाद कर्म मैल टारते॥२३॥

ॐ ह्रीं अस्नाननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९३॥

करैं नहीं कबूल छाल वस्त्र खण्ड धोवती,
दिगानि वस्त्र धार लाज सङ्ग त्याग रोवती।
बने पवित्र अङ्ग शुद्ध बाल से विचार हैं,
जजूँ यतीश काम जीत शीलखड्ग धार हैं॥२४॥

ॐ ह्रीं सर्वथावस्त्रत्यागनियमधारकसाधपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९४॥

करैं सु केशलोंच मुष्टि-मुष्टि धैर्य भावते,
लखाय जन्म जन्तु का स्वकेश ना बढ़ावते।
ममत्व देह से नहीं न शस्त्र से नुचावते,
जजूँ यती स्वतंत्रता विचार चित रमावते॥२५॥

ॐ ह्रीं कृतकेशलोचननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९५॥

करैं न दन्तवन कभी तजा सिंगार अङ्ग का,
लहें स्व खान पान एकबार साध्य अङ्ग का।
तथापि दंत कर्णिका महा न ज्योति त्यागती,
जजूँ यतीश शुद्धता अशुद्धता निवारती॥२६॥

ॐ ह्रीं दन्तधोवनवर्जननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९६॥

धरें न चाह भोग रोग के समान जानते,
शरीर रक्ष काज एक बार भुक्ति ठानते।
सकल दिवस सुध्यान शास्त्रपाठ में बितावते,
जजूँ यती अलाभ अन्न लाभ सा निभावते॥२७॥

ॐ ह्रीं एकभुक्तिनियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९७॥

खड़े रहे सुलेय अन्न देहशक्ति देखते,
न होय बल विहार तब मरण समाधि पेखते।
करें सु आत्मध्यान भी खड़े-खड़े पहाड़ पर,
जजूँ यती विराजते निजानुभव चटान पर॥२८॥

ॐ ह्रीं आस्थितभोजननियमधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं॥१९८॥

(दोहा)

अठविंशति गुण धर यती, शील कवच सरदार।
रत्नत्रय भूषण धरें, टारें कर्म प्रहार॥

ॐ ह्रीं अस्मिन्विम्बप्रतिष्ठोत्सवे मुख्यपूजार्हअष्टमवलयोन्मुद्रितसाधुपरमेष्ठिभ्यस्तन्मूलगुणग्रामेभ्यश्च पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(९)

अड़तालीस *ऋद्धिधारी मुनीश्वरों के लिए अर्घ्य

(दोहा)

लोकालोक प्रकाश कर, केवलज्ञान विशाल।
जो धारें तिन चरण को, पूजूँ नमूं निज भाल॥१॥

ॐ ह्रीं सकललोकालोकप्रकाशनिरावरणकैवल्यलब्धिधारकेभ्यः अर्घ्यं॥ १९९॥

वक्र सरल पर चित्तगत, मनपर्यय जानेय।
ऋजु विपुलमति भेद धर, पूजूँ साधु सुध्येय॥२॥

ॐ ह्रीं ऋजुमतिविपुलमतिमनःपर्ययधारकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२००॥

देश परम सर्वावधि, क्षेत्र काल मर्याद।
द्रव्य भाव को जानता, धारक पूजूँ साध॥३॥

ॐ ह्रीं अवधिधारकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०१॥

कोष्ठ धरे बीजानिको, जानत जिम क्रमवार।
तिम जानत ग्रन्थार्थ को, पूजूँ ऋषिगण सार॥४॥

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०२॥

ग्रन्थ एक पद ग्रह कही, जानत सब पद भाव।
बुद्धि पाद अनुसारि धर, सार जजूँ धर भाव॥५॥

ॐ ह्रीं पादानुसारीबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०३॥

एक बीज पद जानके, कोटिक पद जानेय।
बीज बुद्धि धारी मुनी, पूजूँ द्रव्य सुलेय॥६॥

ॐ ह्रीं बीजबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०४॥

---

* यद्यपि ऋद्धियाँ ६४ होती हैं, लेकिन यहाँ चारणऋद्धि के ९ भेदों को सामूहिकरूप से २ छन्दों में तथा विक्रियाऋद्धि के ११ भेदों को भी २ छन्दों में ही संग्रहित करने से ४८ कहा गया है।

चक्री सेना नर पशू, नाना शब्द करात।
पृथक्-पृथक् युगपत सुने, पूजूँ यति भय जात ॥७॥
ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोत्र-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०५॥

गिरि सुमेरु रविचन्द्र को, कर पद से छू जात।
शक्ति महत् धारी यती, पूजूँ पाप नशात ॥८॥
ॐ ह्रीं दूरस्पर्शशक्ति-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०६॥

दूर क्षेत्र मिष्टान्न फल, स्वाद लेन बल धार।
न वांछा रस लेन की, जजूँ साधु गुणधार ॥९॥
ॐ ह्रीं दूरास्वादनशक्ति-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०७॥

घ्राणेन्द्रिय मर्याद से, अधिक क्षेत्र गन्धान।
जान सकत जो साधु हैं, पूजूँ ध्यान कृपान ॥१०॥
ॐ ह्रीं दूरघ्राणविषयग्राहकशक्ति-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०८॥

नेत्रेन्द्रिय का विषय बल, जो चक्री जानन्त।
तातैं अधिक सुजानते, जजूँ साधु बलवन्त ॥११॥
ॐ ह्रीं दूरावलोकनशक्ति-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०९॥

कर्णेन्द्रिय नवयोजना, शब्द सुनत चक्रीश।
तातें अधिक श्रुशक्तिधर, पूजूँ चरण मुनीश ॥१२॥
ॐ ह्रीं दूरश्रवणशक्ति-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१०॥

बिन अभ्यास मुहूर्त में, पढ जानत दश पूर्व।
अर्थ भाव सब जानते, पूजूँ यती अपूर्व ॥१३॥
ॐ ह्रीं दशपूर्वित्व-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२११॥

चौदह पूर्व मुहूर्त में, पढ जानत अविकार।
भाव अर्थ समझें सभी, पूजूँ साधु चितार ॥१४॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्व-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१२॥

बिन उपदेश सुज्ञान लहि, संयम विधि चालन्त।
बुद्धि अमल प्रत्येक धर, पूजूँ साधु महन्त ॥१५॥
ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धित्व-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१३॥

न्याय शास्त्र आगम बहू, पढें बिना जानन्त।
परवादी जीतें सकल, पूजूँ साधु महन्त ॥१६॥

ॐ ह्रीं वादित्व-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१४॥

अग्नि पुष्प तंतू चलें, जंघा श्रेणी चाल।
चारण ऋद्धि महान धर, पूजूँ साधु विशाल॥१७॥

ॐ ह्रीं जलजंघातंतुपुष्पपत्रबीजश्रेणिवहून्यादिनिमित्ताश्रयचारण-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१५॥

नभ में उड़कर जात हैं, मेरु आदि शुभ थान।
जिन वन्दत भविबोधते, जजूँ साधु सुखखान॥१८॥

ॐ ह्रीं आकाशगमनशक्तिचारणर्द्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१६॥

अणिमा महिमा आदि बहु, भेद विक्रिया रिद्धि।
धरैं करैं न विकारता, जजूँ यती समृद्धि॥१९॥

ॐ ह्रीं अणिमामहिमालघिमागरिमाप्राप्तिप्राकाम्यवशित्वर्द्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं॥२१७॥

अंतर्दधि कामेच्छ बहु, ऋद्धि विक्रिया जान।
तप प्रभाव उपजे स्वयं, जजूँ साधु अघहान॥२०॥

ॐ ह्रीं विक्रियायांतर्धानादि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१८॥

मास पक्ष दो चार दिन, करत रहें उपवास।
आमरणं तप उग्र धर, जजूँ साधु गुणवास॥२१॥

ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धि-प्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१९॥

घोर कठिन उपवास धर, दीप्तमई तन धार।
सुरभि श्वास दुर्गन्ध बिन, जजूँ यती भव पार॥२२॥

ॐ ह्रीं दीप्तऋद्धि-प्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२०॥

अग्नि मांहि जल सम विला, भोजन पय होजाय।
मल कफ मूत्र न परिणमें, जजूँ यती उमगाय॥२३॥

ॐ ह्रीं तप्तऋद्धि-प्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२१॥

मुक्तावली महान तप, कर्मन नाशन हेतु।
करत रहें उत्साह से, जजूँ साधु सुख हेतु॥२४॥
ॐ ह्रीं महातपऋद्धि-प्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२२॥

कास श्वास ज्वर ग्रसित हो, अनशन तप गिरि साध।
दुष्टन कृत उपसर्ग सह, पूजूँ साधु अबाध॥२५॥
ॐ ह्रीं घोरतप-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२३॥

घोर घोर तप करत भी, होत न बल से हीन।
उत्तर गुण विकसित करें, जजूँ साधु निज लीन॥२६॥
ॐ ह्रीं घोरपराक्रम-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२४॥

दुष्ट स्वप्न दुर्मति सकल, रहित शील गुण धार।
परमब्रह्म अनुभव करें, जजूँ साधु अविकार॥२७॥
ॐ ह्रीं घोरब्रह्मचर्य-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२५॥

सकल शास्त्र चिन्तन करें, एक मूहूर्त मंझार।
घटत न रुचि मन वीरता, जजूँ यती भवतार॥२८॥
ॐ ह्रीं मनोबल-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२६॥

सकल शास्त्र पढ जात हैं, एक मूहूर्त मंझार।
प्रश्नोत्तर कर कण्ड शुचि, धरत यजूँ हितकार॥२९॥
ॐ ह्रीं वचनबल-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२७॥

मेरु शिखर राखन वली, मास वर्ष उपवास।
घटै न शक्ति शरीर की, यजूँ साधु सुखवास॥३०॥
ॐ ह्रीं कायबल-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२७॥

अंगुलि आदि स्पर्शते, श्वास पवन छू जाय।
रोग सकल पीड़ा टले, जजूँ साधु सुखदाय॥३१॥
ॐ ह्रीं आमर्षौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२९॥

मुखते उपजे राल जिन, शमन रोग करतार।
परम तपस्वी वैद्य शुभ, जजूँ साधु अविकार॥३२॥
ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३०॥

तन पसेव सह रज उड़े, रोगीजन छू जाय।
रोग सकल नाशे सही, जजूँ साधु उमगाय॥३३॥
ॐ ह्रीं जलौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३१॥

नाक आँख कर्णादि मल, तन स्पर्श हो जाय।
रोगी रोग शमन करें, जजूँ साधु सुख पाय॥३४॥
ॐ ह्रीं मलौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३२॥

मल निपात पर्शी पवन, रजकण अंग लगाय।
रोग सकल क्षण में हरे, जजूँ साधु अघ जाय॥३५॥
ॐ ह्रीं विडौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३३॥

तन नख केश मलादि बहु, अंग लगी पवनादि।
हरै मृगी सूलादि बहु, जजूँ साधु भववादि॥३६॥
ॐ ह्रीं सर्वौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३४॥

विष मिश्रित आहार भी, जहं निर्विष हो जाय।
चरण धरें भू अमृती, जजूँ साधु दु:ख जाय॥३७॥
ॐ ह्रीं आस्याविष-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३५॥

पड़त दृष्टि जिनकी जहाँ, सर्वहिं विष टल जाय।
आत्म रमी शुचि संयमी, पूजूँ ध्यान लगाय॥३८॥
ॐ ह्रीं दृष्ट्यविष-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३६॥

मरण होय तत्काल यदि, कहें साधु मर जाव।
तदपि क्रोध करते नहीं, पूजूँ बल दरशाव॥३९॥
ॐ ह्रीं आशीविष-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३७॥

दृष्टि क्रूर देखें यदी, तुर्त काल वश थाय।
निज पर सुखकारी यती, पूजूँ शक्ति धराय॥४०॥
ॐ ह्रीं दृष्टिविष-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३८॥

नीरस भोजन कर धरे, क्षीर समान बनाय।
क्षीरस्रावी ऋद्धि धरे, जजूँ साधु हरषाय॥४१॥
ॐ ह्रीं क्षीरस्रावि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२३९॥

वचन जास पीड़ा हरे, कटु भोजन मधुराय।
मधुस्रावी वर ऋद्धि धरे, जजूँ साधु उमगाय॥४२॥

ॐ ह्रीं मधुश्रावि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४०॥

रुक्ष अन्न कर में धरे, घृत रस पूरण थाय।
घृतश्रावी वर ऋद्धि धर, जजूँ साधु सुख पाय॥४३॥

ॐ ह्रीं घृतश्रावि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४१॥

रुक्ष कटुक भोजन धरे, अमृत सम हो जाय।
अमृत सम वच तृप्ति कर, जजूँ साधु भय जाय॥४४॥

ॐ ह्रीं अमृतश्रावि-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४२॥

दत्त साधु भोजन बचे, चक्री कटक जिमाय।
तदपि क्षीण होवे नहीं, जजूँ साधु हरषाय॥४५॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहान-ऋद्धिप्राप्तेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४३॥

सकुड़े थानक में यती, करते वृष उपदेश।
बैठे कोटिक नर पशू, जजूँ साधु परमेश॥४६॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालय-ऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४४॥

या प्रमाण ऋद्धीन को, पावन तप परभाव।
चाह कछू राखत नहीं, जजें साधु धर भाव॥४७॥

ॐ ह्रीं सकल-ऋद्धिसंपन्नसर्वमुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४५॥

(दोहा)

चौदासे त्रेपन मुनी, गणी तीर्थ चौबीस।
जजूँ द्रव्य आठो लिये, नाय-नाय निज शीस॥४८॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थेश्वराग्रिमसमावर्ति-त्रिपंचाशच्चतुर्दशशतगणधरमुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४६॥

अड़तालीश हजार अर, उन्निस लक्ष प्रमान।
तीर्थंकर चौबीस यति, संघ यजूँ धरि ध्यान॥

ॐ ह्रीं वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरसभासंस्थायि एकोनत्रिंशल्लक्षाष्टचत्वारिंशत्सहस्र-प्रमितमुनीन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४६॥

चार कोनों में स्थापित जिनप्रतिमा, जिनमंदिर, जिन शास्त्र व जिनधर्म के लिए अर्घ्य

(दोहा)

नौसे पच्चिस कोटि लख, त्रैपन अट्ठावीस।
सहस ऊन कर बावना, बिंब अकृत नम शीस॥

ॐ ह्रीं नवशतपंचविंशतिकोटित्रिपंचाशल्लक्षसप्तविंशतिसहस्रनवशताष्टचत्त्वारिंशत्-प्रमित-अकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४७॥

आठ कोड़ लख छप्पने, सत्तानवे हजार।
चारि शतक इक असी जिन, चैत्य अकृत भज सार॥

ॐ ह्रीं अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिसंख्याकृत्रिमजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४८॥

जय मिथ्यात्व नाग को सिंहा, एक पक्ष जल धर को मेहा।
नरक कूपते रक्षक जाना, भज जिन आगम तत्त्व खजाना॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादांकितजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४९॥

जिनेन्द्रोक्त धर्म दयाभाव रूपा,
यही द्वैविधा संयमै है अनूपा।
यही रत्नत्रय मय क्षमा आदि दशधा,
यही स्वानुभव पूजिये द्रव्य अठ धा॥

ॐ ह्रीं दशलक्षणोत्तमादित्रिलक्षणसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूप तथामुनिग्रहस्थाचारभेदेन-द्विविधं तथाद्वयरूपत्वेनैकरूपजिनधर्मायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२५०॥

अर्हत्सिद्धाचार्य गुरु, साधु जिनागम धर्म।
चैत्य चैत्यग्रह देव नव, यज मंडल कर सर्म॥

ॐ ह्रीं सर्वयागमण्डलदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विघ्न क्षय जाय शांति बाढे सही,
भव्य पुष्टता लहें क्षोभ उपजे नहीं।
पञ्चकल्याणक होंय सबहि मङ्गलकरा,
जासे भवदधि पार लेय शिवधर शिरा॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

पञ्चकल्याणक पूजन खण्ड

गर्भकल्याणक स्तुति

जय तीर्थंकर जय जगतनाथ, अवतरे आज हम हैं सनाथ।
धन भाग महारानी सुहाग, जो उर आए जिन सुरग त्याग॥१॥

हम भक्ति करन उमगे अपार, आए आनन्द धर राजद्वार।
हम अंग सफल अपना करेंय, जिन मात पिता सेवा करेंय॥२॥

यह जगत तात यह जगत मात, यह मंगलकारी जग विख्यात।
इनकी महिमा नहिं कही जाय, इन आतम निश्चय मोक्ष पाय॥३॥

जिनराज जगत उद्धार कार, त्रय जगत पूज्य अघ चूरकार।
तिनके प्रगटावनहार नाथ, हम आए तुम घर नाय माथ॥४॥

* * *

तुम देखे दरश सुख पाये नयना॥टेक॥
तुम जग ताता तुम जग माता, तुम वन्दन से भव भय ना॥१॥
तुम गृह तीर्थंकर प्रभु आए, तुम देखे सोलह सुपना॥२॥
तुम भव त्यागी मन वैरागी, सम्यक्दृष्टि शुचि वयना॥३॥
तुम सुत अनुपम ज्ञान विराजे, तीन ज्ञानधारी सुजना॥४॥
तुम सुत राज्य करैं सुरनर पे, नीति निपुण दुःख उद्धरना॥५॥
तुम सुत साधु होय वन विहरे, तप साधत कर्मन हरना॥६॥
तुम सुत केवलज्ञान प्रकाशे, जग मिथ्यातम सब हरना॥७॥
तुम सुत धर्मतत्त्व सब भाषे, भविक अनेक भव से तरना॥८॥
कर्मबन्ध हर शिवपुर पहुँचे, फिर कबहूँ नहिं अवतरना॥९॥
हम सब आज जन्म फल मानो, गर्भोत्सव कर अघ दहना॥१०॥

गर्भकल्याणक पूजन

(दोहा)

श्री जिन चौबिस मात शुभ, तीर्थंकर उपजाय।
कियो जगत कल्याण बहु, पूजों द्रव्य मँगाय।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरा: गर्भकल्याणकप्राप्ता: अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरा: गर्भकल्याणकप्राप्ता: अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरा: गर्भकल्याणकप्राप्ता: अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाली)

भरि गंगा जल अविकारी, मुनि चित सम शुचिता धारी।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्य: गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्य: जन्मजरामृत्युविनाशनायजलं...।

घसि केशर चंदन लाऊँ, भवताप सकल प्रशमाऊँ।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्य: गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

शुभ अक्षत दीर्घ अखण्डे, तृष्णापर्वत निज खण्डे।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्य: गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्य: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

सुवरणमय पावन फूला, चित कामव्यथा निर्मूला।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्य: गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

ताजा पकवान बनाऊँ, जासे क्षुधरोग नशाऊँ।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्य: गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीपक रत्ननमय लाऊँ, सब दर्शनमोह हटाऊँ।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूपायन धूप जलाऊँ, कर्मन का वंश मिटाऊँ।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

फल उत्तम-उत्तम लाऊँ, शिवफल उद्देश बनाऊँ।
जिन मात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

शुचि आठों द्रव्य मिलाऊँ, गुण गाकर मन हरषाऊँ।
जिनमात जजूँ सुखदाई, जिनधर्म प्रभाव सहाई।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः गर्भकल्याणकप्राप्तेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गर्भकल्याणकविभूषित चौबीस तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(गीता)

सर्वार्थसिद्धि विमान से जिन ऋषभ चय आए यहाँ,
मरुदेवी माता गरभ शोभै होय उत्सव शुभ तहाँ।
आषाढ़ वदि दुतिया दिना सब इन्द्र पूजें आयके,
हम हूँ करैं पूजा सुमाता गुण अपूरव ध्याय के।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णपक्षे द्वितीयायां मरुदेविगर्भावतरिताय वृषभदेवायार्घ्यं...॥१॥

(दोहा)

जेठ अमावस सार दिन, गर्भ आय अजितेश।
विजया माता हम जजें, मेटैं सर्व कलेश।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां विजयसेनागर्भावतरितायाजितदेवायार्घ्यं स्वाहा॥२॥

(संकर)

फागुन असित सित अष्टमी को गर्भ आए नाथ,
धन पुण्य मात सुसैन का संभव धरे सुख साथ।

उपकार जग का जो भया, सुरगुरु कथत थक जाय,
हम ल्याय के शुभ अर्घ्य पूजैं विघ्न सब टल जाय॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां सुषेणागर्भावतरिताय संभवदेवायाार्घ्यं नि. स्वाहा॥३॥

(गाथा)

गर्भस्थिति अभिनन्दा, वैसाख सित अष्टमी दिना सारा।
सिद्धार्था शुभ माता पूजूँ चरण सुजान उपकारा॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां सिद्धार्थागर्भावतरितायाभिनन्दनदेवायाार्घ्यं नि. स्वाहा॥४॥

(सोरठा)

श्रावण सित पख आप, मात मंगला उर वसे।
श्री सुमतीश जिनाय, पूजूँ माता भाव सों॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां मंगलागर्भावतरिताय सुमतिदेवायाार्घ्यं नि. स्वाहा॥५॥

(शिखरिणी)

वदी षष्ठी जानो सुभग महिना माघ सुदिना,
सुसीमा माता के गर्भ तिष्ठै पद्म सु जिना।
जजों लैके अर्घ्यं मात देवी द्वन्द चरणा,
कटै जासे हमरे सकल कर्म लेहु शरणा॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां सुसीमागर्भावतरिताय पद्मप्रभायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

(धोदका)

भादव शुक्ल छठी तिथि जानी, गर्भ धरे पृथ्वी महरानी।
श्री सुपार्श्व जिननाथ पधारे, जजूँ मात दुःख टाल हमारे॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां वसुन्धरागर्भावतरिताय सुपार्श्वदेवायाघ्यर्यं नि. स्वाहा॥७॥

(शिखरिणी)

सुभग चैतर महिना असित पख में पांचम दिना,
सुलखना माता ने गर्भ धारे चन्द्र सु जिना।
जजौं लैके अर्घ्यं मात जिनके शुद्ध चरणा,
कटैं जासे हमरे सकल कर्म लेहु शरणा॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण पंचम्यां सुलक्षणागर्भावतरिताय चन्द्रप्रभायार्घ्यं नि. स्वाहा॥८॥

(सोरठा)

पुष्पदन्त भगवान, मात रमा के अवतरे।
फागुन नौमि महान, जजैं मात के चरण जुग॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां रमादेविगर्भावतरिताय पुष्पदन्तायार्घ्यं नि. स्वाहा॥९॥

(चाली)

वदि चैत तनी छठ जानी, सीतल प्रभु उपजे ज्ञानी।
नंदा माता हरखानी, पूजूँ देवी उर आनी॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां सुनंदागर्भावतरिताय शीतलायार्घ्यं नि. स्वाहा॥१०॥

वदी जेठ तनी छठि जानी, विष्णुश्री मात बखानी।
श्रेयांसनाथ उपजाए, पूजूँ देवी उर आनी॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां विमलागर्भावतरिताय श्रेयांसनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा॥११॥

आषाढ वदी छठि गाई, श्री वासुपूज्य जिनराई।
सुजया माता हरखानी, पूजूँ ता पद उर आनी॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठ्यां जयावतिगर्भावतरिताय वासुपूज्यायार्घ्यं नि. स्वाहा॥१२॥

(मालती)

जेठ वदी दसमी गणिये शुभ, मात सुश्यामा गर्भ पधारे,
नाथ विमल आकुलता हारी, तीन ज्ञानधर धर्म प्रचारे।
ता माता का धन्य भाग हैं, पूजत हैं हम अर्घ्य सुधारे,
मंगल पावें विघ्न नशावें, वीतरागता भाव सम्हारे॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां श्यामागर्भावतरिताय विमलनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा॥१३॥

(अडिल्ल)

एकम कार्तिक कृष्ण गर्भ में आय के,
नाथ अनन्त सु सुरजा माता पाय के।
पूजूँ देवी सार धन्य तिस भाग है,
जासे विघ्न पलाय उदय सौभाग है॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां जयश्यामागर्भावतरितायानतनाथायार्घ्यं नि. ...॥१४॥

मात सुव्रता धर्म जिनं उर धारियो,
तेरसि सुदि वैशाख सु सुख संचारियो।
पूजूँ माता ध्याय धर्म उद्धारणी,
शिवपद जासे होय सुमंगल कारणी।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णत्रयोदश्यां सुप्रभागर्भावतरिताय धर्मनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा।।१५।।

(शिखरिणी)

महा ऐरादेवी परम जननी शांति जिनकी,
सुदी सातें भादों करत पूजा इन्द्र तिनकी।
जजूँ मैं लै अर्घ्यं मात जिन के द्वन्द चरणा,
भजे मम अघ सारे, नसत भव है जास शरणा।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां ऐरादेविगर्भावतरिताय शांतिनथायार्घ्यं नि. स्वाहा।।१६।।

(चाली)

सावन दशमी अन्धियारी, जिन गर्भ रहे सुखकारी।
प्रभु कुन्थु श्रीमती माता, पूजूँ जासों लहुँ साता।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां श्रीकान्तागर्भावतरिताय कुन्थुनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा।।१७।।

(मालती)

है गुण शील तनी सरिता, अरनाथ तनी जननी सुख खानी।
मित्रा नाम प्रसिद्ध जगत में, सेव करत देवी हरषानी।।
मुक्ति होन को यश धारत है, सम्यक् रत्नत्रय पहचानी।
फागुन की सित तीज दिना अर, गर्भ धरे जजि हों महरानी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां मित्रसेनागर्भावतरितायायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

(दोहा)

चैत्र शुक्ल पड़िवा वसे, मल्लिनाथ जिनदेव।
प्रजावती के गर्भ में, जजूँ मात करूँ सेव।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां प्रजावतीगर्भावतरिताय मल्लिजिनायार्घ्यं नि.स्वाहा।।१९।।

(अडिल्ल)

श्रावण वदि दुतिया दिन, सुव्रतिनाथ जू,
श्यामा उर में बसे ज्ञान त्रय साथ जू।

ता माता के चरणकमल पूजें सदा,
मंगल होय महान विघ्न जावैं विदा।।
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां श्यामागर्भावतरिताय मुनिसुव्रतनाथायार्घ्यं नि. ...॥२०॥

(सोरठा)

नमिनाथ भगवान, विपुला माता उर बसे।
क्वॉर वदी दुज जान, ता देवी पूजूँ मुदा।।
ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां सुभद्रागर्भावतरितायनमिनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा॥२१॥

(मालती)

कार्तिक मास सुदी छठि के दिन, श्री जिन नेम प्रभू सुखकारी।
मात शिवा के गर्भ पधारे, मुदित भये जग के नरनारी।।
धन्य मात शिवपथ अनुगामी, मोक्ष नगर की है अधिकारी।
पूजूँ द्रव्य आठ शुभ लैके, मिटत कालिमा कर्म अपारी।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां शिवागर्भावतरिताय नेमिनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा॥२२॥

(चाली)

वैशाख वदी दुज जाना, श्री पार्श्वनाथ भगवाना।
वामादेवी उर आए, पूजत हम भाव लगाए।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां वामागर्भावतरिताय पार्श्वनाथायार्घ्यं नि. स्वाहा॥२३॥

(मालती)

मास आषाढ सुदी छठि के दिन, श्री जिन वीर प्रभू गुणधारी।
त्रिशला माता गर्भ पधारे, सकल लोक को मंगलकारी।।
मोक्षमहल की है अधिकारी, शांत सुधा को भोगनहारी।
जजूँ मात के चरण युगल को, हरूँ विघ्न होऊँ अविकारी।।
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठ्यां त्रिशलादेविगर्भावतरिताय महावीरायार्घ्यं नि. स्वाहा॥२४॥

जयमाला

(श्रग्विणी)

धन्य हैं धन्य हैं मात जिननाथ की,
इन्द्र देवी करैं भक्ति भावां थकी।

पूजि हों द्रव्य ले विघ्न सारे टलें,
गर्भकल्याण पूजन सकल अघ दलें।।१।।
रूप की खान हैं शील की खान हैं,
धर्म की खान हैं ज्ञान की खान हैं।
पुण्य की खान हैं, सुख की खान हैं,
तीर्थजननी महा शांति की खान हैं।।२।।
भेदविज्ञान से आप-पर जानतीं,
जैनसिद्धान्त का मर्म पहचानतीं।
आत्म-विज्ञान से मोह को हानतीं।
सत्य चारित्र से मोक्षपथ मानतीं।।३।।
होत आहार नीहार नहिं धारतीं,
वीर्य अनुपम महा देह विस्तारतीं।
गर्भ धारण किये दुःख सब टालतीं,
रूप को ज्ञान को वृद्धि कर डालतीं।।४।।
मात चौबिस महा मोक्ष अधिकारणी,
पुत्र जनतीं जिन्हें मोक्ष में धारिणी।
गर्भकल्याण में पूजते आप को,
हो सफल यज्ञ यह छांड सन्ताप को।।५।।

(धत्ता त्रिभंगी)

जय मंगलकारी मात हमारी बाधाहारी कर्म हरो,
तुम गुण शुचिधारी हो अविकारी, सम दम यम निज मांहि धरो।
हम पूजें ध्यावें मंगल पावें शक्ति बढावें वृष पाके,
जिन यज्ञ मनोहर शांत सुधाकर, सफल करैं तव गुण गाके।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योगर्भकल्याणकप्राप्त महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मकल्याणक स्तुति

(पद्धरी)

तुम जगतज्योति तुम जगतईश

तुम जगत-ज्योति तुम जगतईश, तुम जगत-गुरु जग नमत शीस।
तुम केवलज्ञानप्रकाशकार, तुम ही सूरज तम-मोहहार॥१॥

तुम देखे भव्यकमल फुलाय, अघभ्रमर तुरत तहंसे पलाय।
जय महागुरु जय विश्वज्ञान, जय गुणसमुद्र करुणानिधान॥२॥

जो चरणकमल माथे धराय, वह भव्य तुरत सद्ज्ञान पाय।
हे नाथ! मुक्तिलक्ष्मी अबार, तुम को देखत हैं प्रेम धार॥३॥

कृतकृत्य भए हम दर्श पाय, हम हर्ष नहीं चित्त में समाय।
हम जन्म सफल मानो अबार, तुमको परशे हे भव-उबार॥४॥

(पद्धरी)

जय वीतराग हत रागदोष

जय वीतराग हत रागदोष, राजत दर्शन क्षायिक अदोष।
तुम पापहरण हो निःकषाय, पावन परमेष्ठी गुणनिकाय॥१॥

तुम नयप्रमाण ज्ञाता अशेष, श्रुतज्ञान सकल जानो विशेष।
तुम अवधिज्ञानधारी विशाल, मतिज्ञानधरण सुखकर कृपाल॥२॥

तुम कामरहित हो कामजीत, तुम विद्यानिधि हो कर्मजीत।
तुम शांतस्वभावी स्वयंबुद्ध, तुम करुणानिधि धर्मी अक्रुद्ध॥३॥

तुम वदतांवर कृतकृत्य ईश, वाचस्पति गुणनिधि गिराईश।
तुम मोक्षमार्ग उपदेशकार, महिमा तुमरी को लहे पार॥४॥

(दोहा)

नाम लिये थुति के किये, पातक सर्व पलाय।
मंगल होवे लोक में, स्वात्मभूति प्रगटाय॥

जन्मकल्याणक पूजन

(शङ्कर)

जिननाथ चौबिस चरण पूजा करत हम उमगाय,
जग जन्म लेके जग उधारो जजैं हम चित लाय।।
तिन जन्मकल्याणक सु उत्सव इन्द्र आय सुकीन,
हम हूँ सुमर ता समय को पूजत हिये शुचि कीन।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकराः जन्मकल्याणकप्राप्ताः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्राननम्।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकराः जन्मकल्याणकप्राप्ताः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकराः जन्मकल्याणकप्राप्ताः अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्।

(चाल)

जल निर्मल धार कटोरी, पूजूँ जिन निज कर जोड़ी।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशरमय लाऊँ, भव का आताप शमाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः संसार-तापविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत शुभ धोकर लाऊँ, अक्षय गुण को झलकाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर पुहपनि चुनि लाऊँ, निज कामव्यथा हटवाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान मधुर शुचि लाऊँ, हनि रोग क्षुधा सुख पाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक करके उजियारा, निज मोहतिमिर निरवारा।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन धूप खिवाऊँ, निज अष्ट करम जलवाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम-उत्तम लाऊँ, शिवफल जासे उपजाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आठों द्रव्य मिलाऊँ, मैं आठों गुण झलकाऊँ।
पद पूजन करहुँ बनाई, जासे भवजल तर जाई।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मकल्याणक विभूषित चौबीस तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

वदि चैत नवमि शुभ गाई, मरूदेवि जने हरषाई।
श्री रिषभनाथ युग आदी, पूजूँ भव मेट अनादी॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१॥

दशमी शुभ माघ वदी की, विजया माता जिनजी की।
उपजे श्री अजित जिनेशा, पूजूँ मेटो सब क्लेशा॥

ॐ ह्रीं माघवदीदशम्यां श्रीअजितनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२॥

कार्तिक सुदि पूरणमासी, माता सुसैन हुल्लासी।
श्री सम्भवनाथ प्रकाशे, पूजत आपा पर भासे॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥३॥

शुभ चौदश माघ सुदी की, अभिनन्दननाथ विवेकी।
उपजे सिद्धार्था माता, पूजूँ पाऊँ सुख साता॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्दश्यां श्रीअभिनन्दननाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥४॥

ग्यारस है चैत सुदी की, मंगला माता जिनजी की।
श्री सुमति जने सुखदाई, पूजूँ मैं अर्घ्य चढाई॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥५॥

कार्तिक वदी तेरसि जानो, श्री पद्मप्रभु उपजानो।
है मात सुसीमा ताकी, पूजूँ ले रुचि समता की॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥६॥

शुचि द्वादश जेठ सुदी की, पृथवी माता जिनजी की।
जिननाथ सुपारस जाए, पूजूँ हम मन हरषाए॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ शुक्लद्वादश्यां श्री पार्श्वनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥७॥

शुभ पूस वदी ग्यारस को, है जन्म चन्द्रप्रभु जिनको।
धन्य मात सुलखनादेवी, पूजूँ जिनको मुनिसेवी॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लएकादश्यां श्री चन्द्रप्रभजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥८॥

अगहन सुदि एकम जाना, जिन मात रमा सुखखाना।
श्री पुष्पदंत उपजाए, पूजतहूँ ध्यान लगाये ।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥९॥

द्वादश वदि माघ सुहानी, नंदा माता सुखदानी।
श्री शीतल जिन उपजाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१०॥

फागुन वदि ग्यारस नीकी, जननी विमला जिनजी की।
श्रेयांसनाथ उपजाए, हम पूजत ही सुख पाये ।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णदशम्यां श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥११॥

वदि फाल्गुन चौदसि जाना, विजया माता सुखखाना।
श्री वासुपूज्य भगवाना, पूजूँ पाऊँ जिन ज्ञाना।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१२॥

शुभ द्वादश माघ वदी की, श्यामा माता जिनजी की।
श्री विमलनाथ उपजाए, पूजत हम ध्यान लगाए।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां श्रीविमलनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१३॥

द्वादशि वदि जेठ प्रमाणी, सुरजा माता सुखदानी।
जिननाथ अनन्त सुजाए, पूजत हम नाहिं अघाए।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१४॥

तेरसि सुदि माघ महीना, श्री धर्मनाथ अघ छीना।
माता सुव्रता उपजाए, हम पूजत ज्ञान बढाए।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१५॥

वदि चौदस जेठ सुहानी, ऐरा देवी गुन खानी।
श्री शान्ति जने सुख पाए, हम पूजत प्रेम बढाए।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां श्रीशान्तिनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१६॥

पडिवा वैसाख सुदी की, लक्ष्मीपति माता नीकी।
श्री कुन्थुनाथ उपजाए, पूजत हम अर्घ्य बढाए।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१७॥

अगहन सुदि चौदस मानी, मित्रा देवी हरषानी।
अरि तीर्थंकर उपजाए पूजे हम मन वच काए।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां श्रीअरनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१८॥

अगहन सुदि ग्यारस आए, श्री मल्लिनाथ उपजाए।
है मात प्रजापति प्यारी, पूजत अघ विनशै भारी।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकादश्यां श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१९॥

दशमी वैसाख वदी की, श्यामा माता जिनजी की।
मुनिसुव्रत जिन उपजाए, पूजत हम ध्यान लगाए।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२०॥

दशमी आषाढ वदी की, विपुला माता जिनजी की।
नमि तीर्थंकर उपजाए, पूजत हम ध्यान लगाए।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां श्रीनमिनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२१॥

श्रावण शुकला छठि जानो, उपजे जिन नेमि प्रमाणो।
जननी सु शिवा जिनजी की, हम पूजत है थल शिवकी॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२२॥

वदि पूस चतुर्दशि जानी, वामादेवी हरषानी।
जिन पार्श्व जने गुणखानी, पूजें हम नाग निशानी।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२३॥

शुभ चैत्र त्रयोदश शुकला, माता गुणखानी त्रिशला।
श्री वर्द्धमान जिन जाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२४॥

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

नमो जै नमो जै नमो जै जिनेशा,
तुम्हीं ज्ञान सूरज तुम्हीं शिव प्रवेशा।

तुम्हें दर्श करके महामोह भाजे,
तुम्हें पर्श करके सकल ताप भाजे॥१॥
तुम्हें ध्यान में धारते जो गिराई,
परम आत्म-अनुभव छटा सार पाई।
तुम्हें पूजते नित्य इन्द्रादि देवा,
लहैं पुण्य अद्भुत परम ज्ञान-मेवा॥२॥
तुम्हारो जनम तीन भू दुःख निवारी,
महा मोह मिथ्यात हिय से निकारी।
तुम्हीं तीन बोधं धरे, जन्म ही से,
तुम्हें दर्शनं क्षायिकं रहे जन्म ही से॥३॥
तुम्हें आत्मदर्शनं रहे जन्म ही से,
तुम्हें तत्त्वबोधं रहे जन्म ही से।
तुम्हारा महा पुण्य आश्चर्यकारी,
सु महिमा तुम्हारी सदा पापहारी॥४॥
करा शुभ न्हवन क्षीरसागर जु जल से,
मिटी कालिमा पाप की अंग पर से।
हुआ जन्म सफलं करी सेव देवा,
लहूँ पद तुम्हारा इसी हेतु सेवा॥५॥

(दोहा)

श्री जिन चौबीस जन्म की, महिमा उर में धार।
पूज करत पातक टलें, बढे ज्ञान अधिकार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिजिनेभ्यो जन्मकल्याणकप्राप्तेभ्य: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो! देव-गुरु-धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं, इनके आधार से धर्म है। इनमें शिथिलता रखने से अन्य धर्म किसप्रकार होगा? इसलिए बहुत कहने से क्या? सर्वथा प्रकार से कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का त्यागी होना योग्य है।

- मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ १९२

तपकल्याणक पूजन

(गीता)

श्री रिषभदेव सु आदि जिन श्रीवर्द्धमान जु अंत हैं।
वन्दुहुं चरणवारिज तिन्होंके जजत तिनको संत हैं।।
करके तपस्या साधु व्रत ले मुक्ति के स्वामी भए।
तिन तपकल्याणक यजन को हम द्रव्य आठों हैं लए।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानजिना: अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानजिना: अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानजिना: अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्।

(चाल)

शुचि गंगाजल भर झारी, रुज जन्म मरण क्षयकारी।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन घसि लाऊँ, भव का आताप शमाऊँ।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्य: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ले शशि दुतिकारी, अक्षयगुण के करतारी।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहूफूल सुवर्ण चुनाऊँ, निज कामव्यथा हटवाऊँ।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे स्वच्छ बनाऊँ, निज रोग क्षुधा मिटवाऊँ।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ले तम हरतारा, निज ज्ञानप्रभा विस्तारा।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।
ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन धूप खिवाऊँ, निज आठों कर्म जलाऊँ।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।
ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुन्दर ताजे लाऊँ, शिवफल ले चाह मिटाऊँ।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।
ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आठों द्रव्य मिलाऊँ, करि अर्घ्य परमसुख पाऊँ।
तपसी जिन चौबिस गाए, हम पूजत विघ्न नशाए।।
ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानजिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपकल्याणक विभूषित चौबीस तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

नौमी वदि चैत प्रमाणी, वृषभेष तपस्या ठानी।
निज में निज रूप पिछाना, हम पूजत पाप नशाना।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीवृषभजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१।।

दशमी शुभ माघ वदी को, अजितेश लियो तप नीको।
जग का सब मोह हटाया, हम पूजत पाप भगाया।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णदशम्यां श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं...।।२।।

मगसिर सुदि पूरणमासी, संभव जिन होयं उदासी।
केशलोंच महातप धारो, हम पूजत भय निरवारो।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमायां श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं..।।३।।

द्वादश शुभ माघ सुदी की, अभिनंदन वन चलने की।
चित ठान परम तप लीना, हम पूजत हैं गुण चीन्हा।।
ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं...।।४।।

नौमी वैसाख सुदी में, तप धारा जाकर वन में।
श्री सुमतिनाथ मुनिराई, पूजूँ मैं ध्यान लगाई।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं... ॥५॥

कार्तिक वदि तेरसि गाई, पद्मप्रभु समता भाई।
वन जाय घोर तप कीना, पूजें हम समसुखभीना।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं... ॥६॥

सुदि द्वादश जेठ सुहाई, बारा भावन प्रभु भाई।
तप लीना केश उपाड़े, पूजूँ सुपार्श्व यति ठाड़े।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं... ॥७॥

एकादश पौष वदी को, चन्द्रप्रभु धारा तप को।
वन में जिन ध्यान लगाया, हम पूजत ही सुख पाया।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं... ॥८॥

अगहन सुदि एकम जाना, श्री पुष्पदंत भगवाना।
तप धार ध्याय निज कीना, पूजूँ आतम गुण चीन्हा।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं... ॥९॥

द्वादशि वदी माघ महीना, शीतल प्रभु समता भीना।
तप राखो योग सम्हारो, पूजें हम कर्म निवारो।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं... ॥१०॥

वदि फाल्गुन ग्यारस गाई, श्रेयांसनाथ सुखदाई।
हो तपसी ध्यान लगाया, हम पूजत हैं जिनराया।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

वदि फाल्गुन चौदसि स्वामी, श्री वासुपूज्य शिवगामी।
तपसी हो समता साधी, हम पूजत धार समाधी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं.. ॥१२॥

वदि माघ चौथ हितकारी, श्री विमल सुदीक्षा धारी।
निज परिणति में लय पाई, हम पूजत ध्यान लगाई।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं... ॥१३॥

द्वादशि वदि जेठ सुहानी, वन आए जिन त्रय ज्ञानी।
धर सामायिक तप साधा, हम पूजूँ अनंत हर बाधा।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं...॥१४॥

तेरस सुदि माघ महीना, श्री धर्मनाथ तप लीना।
वन में प्रभु ध्यान लगाया, हम पूजत मुनिपद ध्याया।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं...॥१५॥

चौदस शुभ जेठ वदी में, श्री शांति पधारे वन में।
तहं परिग्रह तज तप लीना, पूजूँ आतमरस भीना।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं...॥१६॥

करि दूर परिग्रह सारी, वैसाख सुदी पड़िवारी।
श्री कुन्थु स्वात्मरस जाना, पूजन से हो कल्याणा।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१७॥

अगहन सुदि दशमी गाई, अरनाथ छोड़ गृह जाई।
तप कीना होय दिगंबर, पूजें हम शुभ भावों कर।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां श्रीअरनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं...॥१८॥

अगहन सुदि ग्यारस कीना, सिर केशलोच हित चीन्हा।
श्री मल्लि यती व्रतधारी, पूजें नित साम्य प्रचारी।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल-एकादश्यां श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१९॥

वैसाख वदि दशमी को, मुनिसुव्रत धारा व्रत को।
समतारस में लौ लाए, हम पूजत ही सुख पाए।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं...॥२०॥

दशमी आषाढ वदी की नमिनाथ हुए एकाकी।
वन में निज आतम ध्याये, हम पूजत ही सुख पाये।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं...॥२१॥

छठि श्रावण शुक्ला आई, श्री नेमिनाथ वन जाई।
करुणा धर पशू छुड़ाए, धारा तप पूजूँ ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं...॥२२॥

लखि पौष इकादशि श्यामा, श्री पार्श्वनाथ गुणधामा।
तप ले वन आसन आना, हम पूजत शिवपद पाना।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां श्रीपार्श्वजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं...॥२३॥

अगहन वदि दशमी गाई, बारा भावन शुभ भाई।
श्री वर्द्धमान तप धारा, हम पूजत हों भव पारा।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय तपकल्याणकप्राप्तायार्घ्यं...॥२४॥

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते मुनिन्दा।
निवारें भली भाँति से कर्म फन्दा॥
संवारे सुद्वादश तपं वन मंझारी।
सदा हम नमत हैं तिन्हें मन सम्हारी॥१॥
त्रयोदश प्रकारं सु चारित्र धारा।
अहिंसा महा सत्य अस्तेय प्यारा॥
परम ब्रह्मचर्य परिग्रह तजाया।
सु धारा महा संयमं मन लगाया॥२॥
दया धार भू को निरखकर चलत हैं।
सुभाषा महाशुद्ध मीठी वदत हैं॥
करैं शुद्ध भोजन सभी दोष टालें।
दया को धरे वस्तु लें मल निकालें॥३॥
वचन काय मन गुप्ति को नित्य धारें।
धरमध्यान से आत्म अपना विचारें॥
धरें साम्य भावं रहें लीन निज में।
सुचारित्र निश्चय धरें शुद्ध मन में॥४॥

ऋषभ आदि श्री वीर चौबीस जिनेशा।
बड़े वीर क्षत्री गुणी ज्ञान ईशा॥
खड्ग ध्यान आतम कुबल मोह नाशा।
जजें हम यतन से स्व आतम प्रकाशा॥५॥

(दोहा)

धन्य साधु सम गुण धरें, सहें परीषह धीर।
पूजत मंगल हों महा, टलें जगतजन पीर॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिवीरांतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः तपकल्याणकप्राप्तेभ्यः अर्घ्यं।

रोम रोम पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥टेक॥

ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जायँ, जब जिनवर के दर्शन पाय॥
जिन-मन्दिर में श्री जिनराज, तन-मन्दिर में चेतनराज॥
तन-चेतन को भिन्न पिछान, जीवन सफल हुआ है आज॥

वीतराग सर्वज्ञ-देव प्रभु, आये हम तेरे दरबार।
तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार॥
मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥१॥

दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार।
गुण अनन्त से शोभित हैं प्रभु, महिमा जग में अपरम्पार॥
शुद्धातम की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥२॥

लोकालोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान।
लीन रहें निज शुद्धातम में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान॥
ज्ञायक पर दृष्टि जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥३॥

प्रभु की अन्तर्मुख-मुद्रा लखि, परिणति में प्रकटे समभाव।
क्षण-भर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव॥
रत्नत्रय-निधियाँ प्रकटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय॥४॥

आहारदान के समय मुनिराज ऋषभदेव की पूजन

(पद्धरि)

जय-जय तीर्थंकर गुरु महान,
हम देख हुए कृत-कृत्य प्राण।
महिमा तुमरी वरणी न जाय।
तुम शिवमारग साधत स्वभाव॥१॥
जय धन्य-धन्य ऋषभेश आज,
तुम दर्शन से सब पाप भाज।
हम हुए सु पावन गात्र आज,
जय धन्य-धन्य तपसार साज॥२॥
तुम छोड़ परिग्रहभार नाथ,
लीनो चारित तप ज्ञान साथ।
निज आतमध्यानप्रकाशकार,
तुम कर्म जलावन वृत्ति धार॥३॥
जय सर्व जीवरक्षक कृपाल,
जय धारत रत्नत्रय विशाल।
जय मौनी आतममननकार,
जग जीव उद्धारण मार्गधार॥४॥
हम गृह पवित्र तुम चरण पाय,
हम मन पवित्र तुम ध्यान ध्याय।
हम भये कृतारथ आप पाय,
तुम चरण सेवने चित बढाय॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्र पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(वसंततिलका)

सुन्दर पवित्र गंगाजल लेय झारी,
डारूँ त्रिधार तुम चरणन अग्र भारी।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्दनादि शुभ केशर मिश्र लाये,
भवताप उपशमकरण निजभाव ध्याये।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ श्वेत निर्मल सुअक्षत धार थाली,
अक्षय गुणा प्रगट कारण शक्तिशाली।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा गुलाब इत्यादि सु पुण्य धारे,
है काम शत्रु बलवान तिसे विदारे।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेणी सुहाल बरफी पकवान लाए,
क्षुदरोग नाशने कारण काल पाए।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुगंधित सु पावन धूप खेऊँ,
अरु कर्म काट को थाल निजात्म बेऊँ।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्राक्षा बदाम फल सार भराय थाली,
शिव लाभ होय सुख से समता संभाली।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अष्ट द्रव्यमय उत्तम अर्घ्य लाया,
संसार खार जल तारण हेतु आया।
श्री तीर्थनाथ वृषभेश मुनीन्द्र चरणा,
पूजूँ सुमंगल करण सब पाप हरणा।।

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(सृग्विणी)

जय मुदारूप तेरे सदा दोष ना,
ज्ञान श्रद्धान पूरित धरैं शोक ना।
राज को त्याग वैराग्य धारी भए,
मुक्ति का राज लेने परम मुनि थयै।।१।।

आत्म को जान के पाप को भान के,
तत्त्व को पाय के ध्यान उर आन के।
क्रोध को हान के मान को हान के,
लोभ को जीत के मोह को भान के।।२।।

धर्ममय होयके साधतैं मोक्ष को,
बाधते मोह को जीतते द्वेष को।
शांतता धारते साम्यता पालते,
आप पूजन किये सर्व अघ बालते॥३॥

धन्य हैं आज हम दान सम्यक् करें,
पात्र उत्तम महा पाप के दुःख दरें।
पुण्य सम्पत्त भरें काज हमरे सरें,
आप सम होयके जन्म सागर तरें॥४॥

ॐ ह्रीं ऋषभतीर्थंकरमुनीन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य वन्दना

जिन्हें मोह भी जीत न पाये, वे परिणति को पावन करते।
प्रिय के प्रिय होते हैं, हम उनका अभिनन्दन करते॥
जिस मंगल अभिराम भवन में, शाश्वत सुख का अनुभव होता।
वन्दन उस चैतन्यराज को, जो भव-भव के दुःख हर लेता॥१॥
जिसके अनुशासन में रहकर, परिणति अपने प्रिय को वरती।
जिसे समर्पित होकर शाश्वत ध्रुव सत्ता का अनुभव करती॥
जिसकी दिव्य ज्योति में चिर संचित अज्ञान-तिमिर घुल जाता।
वन्दन उस चैतन्यराज को, जो भव-भव के दुःख हर लेता॥२॥
जिस चैतन्य महा हिमगिरि से परिणति के घन टकराते हैं।
शुद्ध अतीन्द्रिय आनन्द रस की, मूसलधारा बरसाते हैं॥
जो अपने आश्रित परिणति को, रत्नत्रय की निधियाँ देता।
वन्दन उस चैतन्यराज को, जो भव-भव के दुःख हर लेता॥३॥
जिसका चिन्तनमात्र असंख्य प्रदेशों को रोमांचित करता।
मोह उदयवश जड़वत् परिणति में अद्भुत चेतन रस भरता॥
जिसकी ध्यान अग्नि में चिर संचित कर्मों का कल्मष जलता।
वन्दन उस चैतन्यराज को, जो भव-भव के दुःख हर लेता॥४॥

ज्ञानकल्याणक स्तुति

(त्रोटक)

जय केवलज्ञान प्रकाशधरं। ज्ञानावरणीय विनाश करं॥
जय केवलदर्शन नायक हो। दर्शन-आवरणी घायक हो॥१॥
जय वीर्य अनन्त प्रकाशक हो। जय अन्तराय अघनाशक हो।
तुम मोह बली क्षयकारक हो। क्षायिक समकित के धारक हो॥२॥
क्षायिक चारित्र विशाल धरं। आनन्द अनन्त प्रकाश धरं।
जग मांहि अपूरव सूरज हो। विकसन भवि जीवन नीरज हो॥३॥
मिथ्यात्व महा तम टालन हो। शिवमग उत्तम दरशावन हो।
तुम तारण-तरण तरंड वरं। सुखकारण रत्नकरण्डवरं॥४॥

.....

(मुक्तादान)

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु मुनीश।
परम तप के करतार रिषीश।
न मोह न मान न क्रोध न लोभ।
न हास्य न खेद न द्रोह न क्षोभ॥१॥
ममत्व न राग पदारथ सर्व।
चिदातम वेदत छांड़त गर्व।
सु भेदविज्ञान जगो चित बीच।
सु आतम अनुभव लावत खींच॥२॥
स्वतत्त्व रमन्त करत निज काज।
कषाय रिपु दलने को आज।
लियो सत ध्यान मई अति सार।
नमूँ तुम को जिन कर्म निवार॥३॥

केवलज्ञानकल्याणक पूजन

(गीता)

चौबीस जिनवर तीर्थकारी, ज्ञानकल्याणकधरं।
महिमा अपार प्रकाश जगमें, मोहमिथ्यातमहरं।।
कीने बहुत भविजीव सुखिया, दुःखसागरउद्धरं।
तिनकी चरण पूजा करें, तिन सम बने यह रुचि धरं।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेन्द्राः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेन्द्राः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेन्द्राः अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्।

(चामर)

नीर लाय शीतलं महान मिष्टता धरे,
गन्ध शुद्ध मेलि के पवित्र झारिका भरे।
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

श्वेत चन्दनं सुगन्धयुक्त सार लायके,
पात्र में धराय शांति कारणे चढाय के।
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं।

तन्दुलं भले सुश्वेत वर्ण दीर्घ लाइये,
पाय गुण सु अक्षतं अतृप्तिता नशाइये।
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

क्षीर मोदकादि शुद्ध तुर्त ही बनाइये,
भूख रोग नाश हेतु चर्ण में चढाइये।
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

दीप धार रत्नमय प्रकाशता महान है,
मोह अंधकार हार होत स्वच्छ ज्ञान है॥
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।

धूप गंध सार लाय धूपदान खेइये,
कर्म आठ को जलाय आप आप बेइये॥
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं।

लौंग औ बदाम आम्र आदि पक्व फल लिये,
सुमुक्ति धाम पाय के स्वआत्मअमृत पिये॥
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं।

तोय गंध अक्षतं सुपुष्प चारु चरु धरे,
दीप धूप फल मिलाय अर्घ्य देय सुख करे॥
नाथ चौबिसों महान वर्तमान काल के,
बोध उत्सवं करूं प्रमाद सर्व टाल के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

ज्ञानकल्याणक-विभूषित चौबीस तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(चाली)

एकादशि फागुन वदि की, मरुदेवी माता जिनकी।
हत घाती केवल पायो, पूजत हम चित उमगायो॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताघ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

एकादशि पूष सुदी को, अजितेश हती घाती को।
निर्मल निज ज्ञान उपाये, हम पूजत सम सुख पाये॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२॥

कार्तिकवदि चौथ सुहाई, संभव केवल निधिपाई।
भविजीवन बोध दियो है, मिथ्यामत नाश कियो है॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥३॥

चौदशि शुभ पौष सुदी को अभिनन्दन हन घाती को।
केवल पा धर्म प्रचारा, पूजूँ चरणा हितकारा॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥४॥

एकादशि चैत सुदी को, जिन सुमति ज्ञान लब्धी को।
पाकर भवि जीव उधारे, हम पूजत भव हरतारे॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥५॥

मधु शुक्ला पूरणमासी, पद्मप्रभ तत्त्व-अभ्यासी।
के वल ले तत्त्वप्रकाशा, हम पूजत समसुख भासा॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥६॥

छठि फागुन की अंधियारी, चउ घातीकर्म निवारी।
निर्मल निज ज्ञान उपाया, धन धन सुपार्श्व जिनराया॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठयां श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥७॥

फागुन वदि नौमि सुहाई, चन्द्रप्रभ आतम ध्याई।
हन घाती केवल पाया, हम पूजत सुख उपजाया॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥८॥

कातिक सुदि दुतिया जानो, श्री पुष्पदंत भगवानो।
रज हर केवल दरशानो, हम पूजत पाप विलानो॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥९॥

चौदसि वदि पौष सुहानी, शीतलप्रभु केवलज्ञानी।
भव का संताप हटाया, समता सागर प्रगटाया॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१०॥

वदि माघ अमावसि जानो, श्रेयांस ज्ञान उपजानो।
सब जग में श्रेय कराया, हम पूजत मंगल पाया॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यां श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

शुभ दुतिया माघ सुदी को, पाया केवल लब्धी को।
श्री वासुपूज्य भवितारी, हम पूजत अष्ट प्रकारी॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वितीयायां श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१२॥

छठि माघ वदी हत घाती, केवल लब्धी सुख लाती।
पाई श्री विमल जिनेशा, हम पूजत कटत कलेशा॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठ्यां श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१३॥

वदि चैत अमावसि गाई, निसु केवलज्ञान उपाई।
पूजूँ अनंत जिन चरणा, जो हैं अशरण के शरणा॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अमावस्यां श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१४॥

मासांत पौष दिन भारी, श्री धर्मनाथ हितकारी।
पायो केवल सद्बोधं, हम पूजें छांड़ कुबोधं॥

ॐ ह्रीं पौषपूर्णिमायाम् श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१५॥

सुदि पूस इकादसि जानी, श्री शांतिनाथ सुखदानी।
लहि केवल धर्म प्रचारा, पूजूँ मैं अघ हरतारा॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१६॥

वदि चैत्र तृतीया स्वामी, श्री कुन्थुनाथ गुणधामी।
निर्मल केवल उपजायो, हम पूजत ज्ञान बढ़ायो॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णतृतीयां श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१७॥

कार्तिक सुदि बारस जानो, लहि केवलज्ञान प्रमाणो।
पर तत्त्व-निजत्व प्रकाशा, अरनाथ जजों हत आशा॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां श्रीअरनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१८॥

वदि पूस द्वितीया जाना, श्री मल्लिनाथ भगवाना।
हत घाती केवल पाये, हम पूजत ध्यान लगाये॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१९॥

वैसाख वदी नौमी को, मुनिसुव्रत जिन केवल को।
लहि वीर्य अनंत सम्हारा, पूजूँ मैं सुख करतारा॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२०॥

अगहन सुदि ग्यारस आए, नमिनाथ ध्यान लौ लाए।
पाया केवल सुखदाई, हम पूजत चित हरषाई॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल-एकादश्यां श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२१॥

पडिवा सुभ कार सुदी को, श्री नेमिनाथ जिनजीको।
इच्छो केवल सत ज्ञानं, हम पूजत ही दुःख हानं॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२२॥

तिथि चैत्र चतुर्थी श्यामा, श्री पार्श्वप्रभु गुणधामा।
केवल लहि तत्त्वप्रकाशा, हम पूजत कर शिव आशा॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचर्तुथ्यां श्रीपार्श्वजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२३॥

दशमी वैशाख सुदि को, श्री वर्द्धमान जिनजी को।
उपजो केवल सुखदाई, हम पूजत विघ्न नशाई॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२४॥

जयमाला

(श्रग्विणी)

जय ऋषभनाथजी ज्ञान के सागरा,
घातिया घातकर आप केवल वरा।
कर्मबन्धनमई सांकला तोड़कर,
आपका स्वाद ले स्वाद पर छोड़कर॥१॥

धन्य तू धन्य तू धन्य तू नाथ जी,
सर्व साधू नमें तोहि को माथ जी।
दर्श तेरा करैं ताप मिट जात है,
कर्म भाजें सभी पाप हट जात हैं॥२॥

धन्य पुरुषार्थ तेरा महा अद्भुतं,
मोहसा शत्रु मारा त्रिघाती हतं।
जीत त्रैलोक्य को सर्वदर्शी भए,
कर्मसेना हती दुर्ग चेतन लए॥३॥

आप सत्-तीर्थ त्रयरत्न से निर्मिता,
भव्य लेवें शरण होंय भव-भव रिता।
वे कुशल से तिरें संसृती सागरा,
जाय ऊरध लहें सिद्ध सुन्दर धरा॥४॥

यह समवशर्ण भवि जीव सुख पात हैं,
वाणि तेरी सुनें मन यही भात हैं।
नाथ दीजें हमें धर्म अमृत महा,
इह बिना सुख नहीं दुःख भव में सहा॥५॥

ना क्षुधा ना तृषा राग ना द्वेष है,
खेद चिन्ता नहीं आर्ति ना क्लेश है।
लोभ मद क्रोध माया नहीं लेश है,
वन्दता हूँ तुम्हें तू हि परमेश है॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः ज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि प्रसारण हेतु इन्द्रों द्वारा प्रार्थना

(पद्धरि)

जय परम ज्योति ब्रह्मा मुनीश, जय आदिदेव बृषनाथ ईश।
परमेष्ठी परमातम जिनेश, अजरामर अक्षय गुण विवेश॥१॥

शङ्कर शिवकर हर सर्व मोह, योगी योगीश्वर कामद्रोह।
हो सूक्ष्म निरञ्जन सिद्ध बुद्ध, कर्मांजन मेटन तोय शुद्ध॥२॥

भविकमल प्रकाशन रवि महान, उत्तम वागीश्वर राग हान।
हो वीत द्वेष हो ब्रह्म रूप, सम्यग्दृष्टी गुणराज भूप॥३॥

निर्मल सुख इन्द्रिय रहित धार, सर्वज्ञ सर्वदर्शी अपार।
तुम वीर्य अनन्त धरो जिनेश, तुम गुण पावत नाहिं गणेश॥४॥

तुम नाम लिये अघ दूर जाय, तुम दर्शन तें भवभय नशाय।
स्वामिन् अब तत्त्वन का प्रभेद, कहिये जासे हट कर्म छेद॥५॥

विहार करने हेतु इन्द्रों द्वारा प्रार्थना

(स्तुति)

धन्य-धन्य जिनराज प्रमाणा, धर्मवृष्टिकारी भगवाना।
सत्यमार्ग दरशावनहारे, सरल शुद्ध मग चालनहारे॥१॥

आपी से आपी अरहन्ता, पूज्य भए त्रैलोक महन्ता।
स्व-पर भेदविज्ञान बताया, आतमतत्त्व पृथक् दरशाया॥२॥

स्वानुभूतिमय ध्यान जताया, कर्मकाण्ड पालन समझाया।
धर्म अहिंसामय दिखलाया, प्रेमकरन हितकरन बताया॥३॥
वस्तु अनेक धर्म धरतारा, स्याद्वाद परकाशन हारा।
मत विवाद को मेटनहारा, सत्य वस्तु झलकावन हारा॥४॥
धन तीर्थंकर तेरी वाणी, तीर्थ धर्म सुखकारण मानी।
करहु विहार नाथ बहु देशा, करहु प्रचार तत्त्व उपदेशा॥५॥

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार॥टेक॥
चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार॥
यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार॥१॥
हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय।
ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय॥
यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार॥२॥
लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दुःखमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार॥
यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार॥३॥
अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय।
जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय॥
यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार॥४॥

मोक्षकल्याणक स्तुति

जय ऋषभदेव गुणनिधि अपार।
पहुँचे शिव को निज शक्ति द्वार॥
वन्दूँ श्री सिद्ध महंत आज।
सुधरें जासें मम सर्व काज॥१॥

निर्वाण थान यह पूज्य धाम।
यह अग्नि पूज्य हे रमणराम॥
मन वच तन वन्दूँ बार-बार।
जिन कर्मवंश डालूँ उजाड़॥२॥

कैलाश महा तीरथ पुनीत।
जहं मुक्ति लही सह कर्म जीत॥
नहिं तैजस तन नहिं कारमाण।
नहिं औदारिक कोई प्रमाण॥३॥

है पुरुषाकार सुध्यानरूप।
जिम तन में था तिम है स्वरूप॥
तनु वातवलय में क्षेत्र जान।
पीवत स्वातम रस अप्रमाण॥४॥

हो शुद्ध चिदातम सुख निधान।
हो बल अनन्त धारी सुज्ञान॥
वन्दूँ मैं तुम को बार-बार।
भव सागर पार लहुँ अबार॥५॥

मोक्षकल्याणक पूजन

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर मुक्तिवधूवर भवसागर उद्धार करं,
जय-जय परमातम शुद्ध चिदातम कर्मकलंक निवारकरं॥
जय-जय गुणसागर सुखरत्नाकर आत्ममगनता सार लहं,
जय-जय निर्वाणं पाय सुज्ञानं पूजत पद संसारहरं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकराः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकराः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकराः अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणम्।

(वसन्ततिलका)

पानी महान भरि शीतल शुद्ध लाऊँ।
जन्मादि रोगहर कारण भाव ध्याऊँ।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

केशर सुमिश्रित सुगन्धित चन्दनादी।
आताप सर्व भवनाशन मोह आदी।
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं।

चन्दा समान बहु अक्षत धार थाली।
अक्षय स्वभाव पाऊँ गुणरत्नशाली॥

पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

चम्पा गुलाब मरुवा बहु पुष्प लाऊँ।
दुख टार काम हरके निज भाव पाऊँ॥
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।

ताजे महान पकवान बनाय धारे।
बाधा मिटाय क्षुध रोग स्वयं सम्हारे॥
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

दीपावली जगमगाय अंधेर घाती।
मोहादि तम विघट जाय भव प्रतापी॥
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।

चन्दन कपूर अगरादि सुगन्ध धूपं।
पालूँ जु अष्ट कर्म हो सिद्ध भूपं॥
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं।

मीठे रसाल बादाम पवित्र लाए।
जासे महान फल मोक्ष सु आप पाए॥

पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं।

आठों सु द्रव्य ले हाथ अरघ बनाऊँ।
संसार वास हरके निज सुक्ख पाऊँ॥
पूजूँ सदा चतुर्विंशति सिद्ध कालं।
पाऊँ महान शिवमंगल नाथ कालं॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

मोक्षकल्याणक-विभूषित चौबीस तीर्थंकरों के लिए अर्घ्य

(गीता)

चौदश वदी शुभ माघ की, कैलाशगिरि निज ध्याय के।
वृषभेश सिद्ध हुए शचीपति, पूजते हित पाय के॥
हम धार अर्घ्य महान पूजा, करें गुण मन लाय के।
सब राग दोष मिटाय के, शुद्धात्म मन में भाय के॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥१॥

शुभ चैत सुदि पांचम दिना, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
अजितेश सिद्ध हुए भविकगण, पूजते हित पाय के॥हम.॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२॥

शुभ माघ सुदि षष्ठी दिना, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
सम्भव निजातम केलि करते, सिद्ध पदवी पाय के॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठ्यां श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥३॥

वैशाख सुदि षष्ठी दिना, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
अभिनन्दनं शिवधाम पहुँचे, शुद्ध निज गुण पाय के॥हम.॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

शुभ चैत सुदि एकादशी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
सुमतिजिन शिवधाम पायो, आठ कर्म नशाय के॥हम.॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥५॥

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री पद्मप्रभ निर्वाण पहुँचे, स्वात्म-अनुभव पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।६।।

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री जिन सुपार्श्व स्व स्थान लीयो, स्वकृत आनन्द पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।७।।

शुभ शुक्ल फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री चन्द्रप्रभ निर्वाण पहुँचे, शुद्ध ज्योति जगाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।८।।

शुभ भाद्र शुक्ला अष्टमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री पुष्पदंत स्वधाम पायो, स्वात्म गुण झलकाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल अष्टम्यां श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।९।।

दिन अष्टमी शुभ क्वार सुद, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्रीनाथशीतल मोक्ष पाए, गुण अनन्त लखाय के।।हम धार।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्ल-अष्टम्यां श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

दिन पूर्णमासी श्रावणी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
जिन श्रेयनाथ स्वधाम पहुँचे, आत्मलक्ष्मी पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।११।।

शुभ भाद्र सुद चौदश दिना, मंदारगिरि निज ध्याय के।
श्री वासुपूज्य स्वथान लीनो, कर्म आठ जलाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१२।।

आषाढ वद शुभ अष्टमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री विमल निर्मल धाम लीनो, गुण पवित्र बनाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

अमावसी वद चैत्र की, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
स्वामी अनन्त स्वधाम पायो, गुण अनन्त लखाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावस्यां श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१४।।

शुभ ज्येष्ठ शुक्ला चौथ दिन, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री धर्मनाथ स्वधर्मनायक, भये निज गुण पायके।।हम.।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१५।।

शुभ ज्येष्ठ कृष्णा चौदसी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री शांतिनाथ स्वधाम पहुँचे, परम मार्ग बताय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१६।।

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री कुन्थुनाथ स्वधाम लीनो, परम पद झलकाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

अमावसी वद चैत की, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री अरनाथ स्वथान लीनो, अमर लक्ष्मी पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावस्यां श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१८।।

शुभ शुक्ल फाल्गुन पंचमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री मल्लिनाथ स्वथान पहुँचे, परम पदवी पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।१९।।

फाल्गुन वदी शुभ द्वादशी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
जिननाथ मुनिसुव्रत पधारे, मोक्ष आनन्द पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।२०।।

वैशाख कृष्णा चौदशी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
नमिनाथ मुक्ति विशाल पाई, सकल कर्म नशाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं।।२१।।

आषाढ शुक्ला सप्तमी, गिरनारगिरि निज ध्याय के।
श्री नेमिनाथ स्वधाम पहुँचे, अष्टगुण झलकाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२२॥

शुभ श्रावणी सुद सप्तमी, सम्मेदगिरि निज ध्याय के।
श्री पार्श्वनाथ स्वथान पहुँचे, सिद्धि अनुपम पाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं॥२३॥

अम्मावसी वद कार्तिकी, पावापुरी निज ध्याय के।
श्री वर्द्धमान स्वधाम लीनो, कर्म वंश जलाय के।।हम.।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यां श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२४॥

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते जिनन्दा।
तुम्हीं सिद्धरूपी हरे कर्म फंदा॥
तुम्हीं ज्ञानसूरज भविकनीरजों को।
तुम्हीं ध्येयवायू हरो सब रजों को॥१॥
तुम्हीं निष्कलंक चिदाकार चिन्मय।
तुम्हीं अक्षजीतं निजाराम तन्मय॥
तुम्हीं लोकज्ञाता तुम्हीं लोकपालं।
तुम्हीं सर्वदर्शी हता मान कालं॥२॥
तुम्हीं क्षेमकारी तुम्हीं योगिराजं।
तुम्हीं शांत ईश्वर कियो आप काजं॥
तुम्हीं निर्भय निर्मलं वीतमोहं।
तुम्हीं साम्यअमृत पियो वीतद्रोहं॥३॥
तुम्हीं भवउदधि पारकर्ता जिनेशं।
तुम्हीं मोहतम के विदारक दिनेशं॥

तुम्हीं ज्ञाननीरं भरे क्षीरसागर।
तुम्हीं रत्न गुण के सुगम्भीर आकर॥४॥
तुम्हीं चन्द्रमा निज सुधा के प्रचारक।
तुम्हीं योगियों के परम प्रेमधारक॥
तुम्हीं ध्यान गोचर सुतीर्थङ्करों के।
तुम्हीं पूज्य स्वामी परम गणधरों के॥५॥
तुम्हीं हो अनादी नहीं जन्म तेरा।
तुम्हीं हो सदा सत् नहीं अंत तेरा॥
तुम्हीं सर्वव्यापी परम बोध द्वारा।
तुम्हीं आत्मव्यापी चिदानंद धारा॥६॥
तुम्हीं हो अनित्यं स्वपरिणाम द्वारा।
तुम्हीं हो अभेदं अमिट द्रव्य द्वारा॥
तुम्हीं भेदरूपं गुणानन्त द्वारा।
तुम्हीं नास्तिरूपं परानन्त द्वारा॥७॥
तुम्हीं निर्विकारं अमूरत अखेदं।
तुम्हीं निष्कषायं तुम्हीं जीत वेदं॥
तुम्हीं हो चिदाकार साकार शुद्धं।
तुम्हीं हो गुणस्थान दूर प्रबुद्धं॥८॥
तुम्हीं हो समयसार निज में प्रकाशी।
तुम्हीं हो स्वचारित्र आतमविकाशी॥
तुम्हीं हो निरास्रव निराहार ज्ञानी।
तुम्हीं निर्जराबिन परम सुखनिधानी॥९॥
तुम्हीं हो अबंधं तुम्हीं हो अमोक्षं।
तुम्हीं कल्पनातीत हो नित्य मोक्षं॥
तुम्हीं हो अवाच्यं तुम्हीं हो अचिन्त्यं।
तम्हीं हो सुवाच्यं सु गुणराज नित्यं॥१०॥

तुम्हीं सिद्धराजं तुम्हीं मोक्षराजं।
तुम्हीं तीन भू के ऊरध विराजं॥
तुम्हीं वीतरागं तदपि काज सारं।
तुम्हीं भक्तजन भाव का मल निवारं॥११॥
करैं मोक्षकल्याणकं भक्त भीने।
फुरैं भाव शुद्धं यही भाव कीने॥
नमे हैं जजे हैं सु आनन्द धारें।
शरण मंगलोत्तम तुम्हीं को विचारें॥१२॥

(दोहा)

परम सिद्ध चौबीस जिन, वर्तमान सुखकार।
पूजत भजत सु भाव से, होय विघ्न निरवार॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः मोक्षकल्याणकप्राप्तेभ्यः अर्घ्यं।

बिम्बप्रतिष्ठा हो सफल, नरनारी अघहार।
वीतराग-विज्ञानमय, धर्म बढो अधिकार॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ, फिर जग कीच बीच नहीं आऊँ ।टेक॥
जल गंधाक्षत पुष्प सुमोदक, दीप धूप फल सुन्दर ल्याऊँ।
आनन्द जनक कनक भाजन धरि, अर्घ अनर्घ हेतु पद ध्याऊँ॥१॥
आगम के अभ्यास मांहिं पुनि, चित एकाग्र सदैव लगाऊँ।
संतनि की संगति तजि के मैं, अन्य कहूँ इक छिन नहिं जाऊँ॥२॥
दोषवाद में मौन रहूँ फिर, पुण्य पुरुष गुण निश-दिन गाऊँ।
राग-दोष सब ही को टारी, वीतराग निज भाव बढ़ाऊँ॥३॥
बाहिर दृष्टि खेंच के अन्दर, परमानन्द स्वरूप लखाऊँ।
'भागचन्द' शिव प्राप्त न जोलों, तोलों तुम चरणाम्बुज ध्याऊँ॥४॥

विशेष स्तुति

(त्रिभंगी)

जय-जय अरहंता सिद्ध महंता, आचारज उवझाय वरं,
जय साधु महानं सम्यग्ज्ञानं सम्यक्चारित्र पालकरं।
है मंगलकारी भवहरतारी पापप्रहारी पूज्यवरं,
दीनन निस्तारन सुख विस्तारन करुणाधारी ज्ञानवरं॥१॥

हम अवसर पाए पूज रचाए करी प्रतिष्ठा बिम्ब महा,
बहुपुण्य उपाए पाप धुवाए सुख उपजाए सार महा।
जिनगुण कथ पाए भाव बढाए दोष हटाये यश लीना,
तन सफल कराया आत्म लखाया दुर्गतिकारण हर लीना॥२॥

निज मति अनुसारं बल अनुसारं यज्ञ विधान बनाया है,
सब भूल चूक प्रभु क्षमा करो अब यह अरदास सुनाया है।
हम दास तिहारे नाम लेत हैं इतना भाव बढाया है,
सच याही से सब काज पूर्ण हों यह श्रद्धान जमाया है॥३॥

तुम गुण का चिन्तन होय निरन्तर जावत मोक्ष न पद पावें,
तुमरी पदपूजा करैं निरन्तर जावत उच्च न हो जावें।
हम पढन तत्त्व अभ्यास रहे नित जावत बोध न सर्व लहें,
शुभ सामायिक अर ध्यान आत्म का करत रहें निज तत्त्व गहें॥४॥

जय-जय तीर्थंकर गुणरत्नाकर सम्यक्ज्ञान दिवाकर हो,
जय-जय गुणपूरण औगुणचूरण संशयतिमिर हरणकर हो।
जय-जय भवसागर तारणकारण तुम ही भवि आलम्बन हो,
जय-जय कृतकृत्यं नमें तुम्हें नित तुम सब संकट टारन हो॥५॥